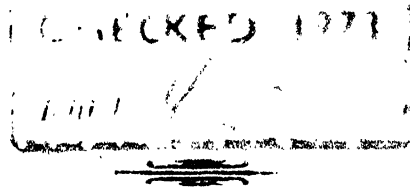


॥ ओ३म् ॥

सत्यार्थ प्रकाश चतुर्दश समुल्लास में उद्धृत

कुर्आन् की आयतों का देवनागरी में

उल्था और अनुवाद



लेखक :—

तार्किक शिरोमणि श्री पं० रामचन्द्र जी, देहलवी

उत्तकाल
एकलस कांगरी

—३०१६०२—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली द्वारा प्रकाशित

प्रथमवार ३००० प्रति]

नवम्बर १९४३

[मूल्य ॥]

भूमिका

मुसलमान महाशयों की ओर से बहुधा यह कहा जाता है कि सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास में कुर्आन की कई आयतों का अनुवाद यथार्थ व युक्त नहीं है। आयतों की संख्या भी बहुत स्थानों पर भ्रान्त है।

मैंने इस बात की सत्यता को परखने के लिए १४ वें समुल्लास का बहुत ध्यान से निरीक्षण किया परन्तु सिवाय कुछ आयतों की संख्या संबंधी भूलों के अर्थ संबंधी ऐसी कोई भूल नहीं पाई जिससे समीक्षा में कुछ अनुचित या इस्लामी सिद्धान्तों के विरुद्ध आक्षेप होगया हो। समीक्षा अद्भुततया सत्य व अपरिहार्य है।

इस समुल्लास में दी हुई आयतों का आर्य्य भाषानुवाद शाह रफीउद्दीन साहब देहलवी के उर्दू तर्जुमे से किया हुआ प्रतीत होता है जो बेमुहावरा होने से आर्य्य भाषा की प्रचलित पद्धति की दृष्टि से असंबद्ध अथवा बेजोड़ है। विरामों के न होने से भाषा कई स्थानों पर अनर्थक सी प्रतीत होती है। इस लिए आ० भाषा में अनुवाद करनेवाले ने अर्थ की संभवता व सार्थकता को दृष्टि में रखते हुए विरामों की कल्पना करली है। जहां २ इस कल्पना से कुछ भेद हुआ है उसका निराकरण नीचे कर दिया गया है।

उर्दू भाषा के लिखने व पढ़ने में यह दोष रहा है कि छोटी “و” और बड़ी “و” को बिना विवेक एक दूसरे के स्थान में लिख दिया जाता

है इससे अर्बी न जानने वाले को उस भाषाके उर्दू तर्जुमे में लिङ्ग की पहचान में भ्रम उत्पन्न हो जाता है।

सबसे बड़ी बात इस संभावना का ध्यान में रखना है कि एक भाषा को दूसरी का और दूसरी को तीसरी का वेप धारण कराने में अनुवादकसे सहसा भूल हो सकती है, जिसको उस सबसे पहली भाषा के विद्वान तो केवल सुन कर जान सकते हैं परंतु अविद्वान नहीं जान सकते। इस लिए जिन महाशयों को एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने, किताबों के लिखने, लिखाने और छपवाने का काम पड़ता रहता है वह १४ वें समुल्लास के उद्धरणों के मार्ग में आने वाली स्पष्ट कठिनाइयों को जानते हुए भी यदि उनकी सत्यता की प्रशंसा करने के स्थान में निंदा करें तो यह उनका पक्षपात होगा।

श्री स्वामी जी महाराज ने समीक्षा के योग्य कुर्आनी आयतों को १५६ खण्डों में विभक्त किया है। जिस २ खण्ड में कुछ शंका होती है या हुई है उसका नीचे निराकरण करता हूं:—

खण्ड सं० ८ की अंतिम आयत के अनुवाद में अर्बी भाषा की दृष्टि से एक भूल हो गई है। सत्यार्थ प्र० का भाषानुवाद इस प्रकार है:—

“तो उम आग से डरो कि जिसका इंधन मनुष्य है और काफिरों के वास्ते पत्थर तय्यार किए गए हैं।”

शाह रफीउद्दीन का उर्दू अनुवाद यह है:—

“पस डरो उस आग से जो इंधन उसका आदमी हैं और पत्थर तय्यार की गई है वास्ते काफ़िरो के।”

कुर्आन् की आयत के अनुसार शाह साहब के तर्जुमे का यह मतलब है:—

“पस उस आग से डरो जिसका इंधन मनुष्य और पत्थर हैं, और जो (आग) काफ़िरो के लिए तय्यार की गई है।”

वास्तव में इस मूल का कारण शाह साहब के अनुवाद का प्रकार ही है। अकस्मात् शाह साहब ने “है” क्रिया को “आदमी” के पीछे लिख दिया और “पत्थर” के पीछे विराम(Сонна) नहीं दिया। आर्य्य भाषा में अनुवाद करने वाले ने सामान्य बुद्धि का प्रयोग करके “है” के पीछे विराम समझ लिया और “पत्थर” को आगे वाले टुकड़े से जोड़ दिया और “गई” को “गए” पढ़ लिया। इस प्रकार अनर्थक से वाक्य को सार्थक बना दिया।

यहां कुर्आन् के कर्त्ता का मतलब “मनुष्य” से मूर्त्तिपूजक और “पत्थर” से मूर्त्तियां ‘है’। मूर्त्तिपूजक चेतन होने से आग में डाले जा सकते हैं और इंधन की नाईं जलसकते हैं परंतु पत्थर की मूर्त्तियां जड़ होने से आग का इंधन नहीं हो सकती और न उनको कोई दुःख हो सकता है। इस लिए आ० भाषानुवादक ने संभवार्थ के आधार पर विराम की कल्पना की—“है” के पश्चात् विराम लगाया और “पत्थर” को आगे वाले वाक्य से जोड़ दिया और बेमुहावरा उर्दू तर्जुमे को बामुहावरा आ० भाषा में लिख दिया जैसाकि १४ वें समुल्लास में इस समय छपा

हुआ है और जो ऊपर उद्धृत किया जा चुका है। इस में श्री स्वामी जी की भूल तो क्या अनुवादक की भूल भी नहीं कह सकते जिसने अर्बी न जानने की अवस्था में, बिना किसी अशुद्ध भावना के, केवल बुद्धि के आधार पर शाह साहब के अनुवाद को सार्थक बना कर आ० भाषा का रूप दे दिया।

खण्ड सं० ६ में “खालिदून्” शब्द के अर्थ में लिङ्ग का भेद हुआ है। इसका अर्थ “सदैव रहने वाले” हैं और “सदैव रहने वाली” नहीं है यह शब्द पुल्लिङ्ग है। इस मूल का कारण भी शाह साहब का तर्जुमा ही है जो इस प्रकार है:—

“वास्ते उनके बीच उनके त्रीबियां हैं पाक की हुई—और बीच उनके हमेशा रहने वाले”

अर्बी न जानने वाला यदि उपर्युक्त वाक्य का आ० भाषानुवाद करे तो वह अर्थ की सार्थकता “वाली” में समझेगा, “वाले” में नहीं। क्यों कि उर्दू भाषा में “ये” तहतानी (छोटी) व फ़ैकानी (बड़ी) को एक दूसरे के स्थान पर लिख, पढ़ देने का आम रिवाज है।

खण्ड सं० ५—इस आयत का तर्जुमा शाह साहब ने यह किया है:—

“दोस्त रखते हैं बहुत अहले किताब में से काश कि फेर दें तुमको पीछे ईमान तुम्हारे के काफ़िर हसद से”

उपर्युक्त तर्जुमे का मतलब कुछ भी समझ में नहीं आता। कोई अर्बी जानने वाला भी जब तक कुर्आन् की मूल आयत को न देखे तब तक सत्यार्थ जान ही नहीं सकता आ० भाषानुवादक ने तो इसको कुछ मतलब वाली भी बना दिया है

परंतु शाह साहब के तर्जुमे का तो सिर पैर ही दिखाई नहीं देता। सत्यार्थ प्रकाश में दिए हुए भाषानुवाद को ही मैं ज़रा विस्तार से लिखता हूँ जिससे सत्यार्थ सुगमता से समझ में आ जावेगा।

ऐसा न हो कि काफ़िर लोग जिनके, ईमान वालों में से (अर्थात् यहूद व नसारा में से) बहुत से दोस्त हैं, ईर्ष्या करके तुमको ईमान से फेर देवें इस आयत में आए हुए “वह” शब्द का अर्थ शाह रफ़ीउद्दीन ने “दोस्त रखते हैं” किया है और अन्यो ने “चाहते हैं” किया है। इस शब्द के दोनों अर्थ हैं

खण्ड सं० ४० में “ईमान न लाया” के स्थान में “ईमान लाया” चाहिये खण्ड सं० ४१ में ‘चाहे’ दृष्टि दोष से मिल गया है। जो “उसकी कुर्सी” वाले वाक्य से पहले आए हुए वाक्य का अंतिम शब्द है। खण्ड सं० १११ में यह वाक्य “और शिक्षा दी हमने उस औरत को” मूल आयत में नहीं है। शाह साहब ने अर्थ को स्पष्ट करने के लिए अपनी ओर से इस तरह बढ़ा दिया है “और हिदायत दी उस औरत को”

इन ६ स्थलों के अतिरिक्त ऐसा कोई और स्थल दिखाई नहीं दिया जिस पर कुछ लिखने की आवश्यकता हो।

स्वामी जी की समीक्षा इतनी सामान्य है कि उसमें उपर्युक्त बातों से कोई दोष नहीं आता है। समीक्षा पर इन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और वह जैसी की तैसी ही रहती है।

छापे की भूलों को छोड़ दिया गया है क्योंकि प्रत्येक आवृत्ति में वे बदल जाती हैं। पाठक स्वयं उनको सही कर लेंगे।

आयत के जिस टुकड़े का अर्थ सत्यार्थ प्रकाश में समीक्षा के लिए उद्धृत नहीं किया गया है उसको मैंने जहाँ २ आवश्यक समझा कोष्ठक में दे दिया है ताकि आयत अधूरी न रहे। सत्यार्थ प्रकाश में समीक्षित आयतों का भाषानुवाद, कहीं २ सिवाय एक दो अक्षरों के हेर फेर के, जैसा का तैसा ही रहने दिया है ताकि शाह रफ़ीउद्दीन साहब देहलवी के उर्दू तर्जुमे की झलक इसमें मौजूद रहे जिसके आधार पर भाषानुवाद किया गया है।

कुर्बान की आयतों को सही याद करने या पढ़ने के लिए इस बात का ध्यान रखें कि सस्वर और हल् याथातथ्य ही पढ़ें नहीं तो स्वाद बिगड़ जायगा।

जहाँ २ ऐसा ‘‘ा’’ दो मात्राएं हों उन अक्षरों का दीर्घ से कुछ लंबा पढ़ें। अर्बी भाषा में कुछ कृकाक्षर ऐसे हैं जो कण्ठ की गहराई से उच्चारण किए जाते हैं, जिनके लिए हिंदी के टाइप् में नीचे बिंदी लगाने की व्यवस्था है परंतु जब वे अक्षर (मज्ज़म) हल् भी होते हैं तो इसके लिए हिंदी के टाइप् में बिंदी और हल् दोनों के एक साथ लगा देने की व्यवस्था नहीं है इसलिए यह कमी रह गई है। बहुत स्थानों पर विसर्ग से काम चलाया गया है।

यदि दूसरी आवृत्ति के निकालने की आवश्यकता पड़ी तो जो कमी इस वार रह गई है उसको उसमें दूर करने का प्रयत्न किया जायगा।

ता० २८-१०-४३ }
शुक्रवार (दीपावली) }

रामचन्द्र देहलवी

उल्लाइक अला हुदमिर्बिहिम् व
उल्लाइक हुमुल् मुफ्लिहून् । (सू० २। आ० ५)

इन्नल्लजीन कफरू सवाउन् अलैहिम्
अअञ्जतहुम् अम्लम् तुंजिहूम् लायोमिनून् ।
(सू० २। आ० ६)

खतमल्लाहु अलाकुलूबिहिम् व अला
सम्एहिम् व अला अब्स्वारिहिम् गिशावतुन्
व लहुम् अजाबुन्अजीम् (सू० २। आ० ७)

(६) फी कुलूबिहिम् मरजुन् फज़ादहु मुल्लाहु
मरज़्बा । (सू० २। आ० ८)

(७) अल्लजी जअल लकुमुल् अज़्वा फ़िरा
शौवस्समाअ विनाअन् । सू० २। आ० २२)

(८) इन्कुंतुम् फी रैबिम् मिम्मा नज़्जल्ना
अला अब्दिना फ़ातू विसरतिम्
मिम्मिस्लिही वदू शुहूदाअकुम् मिन्
दूनिल्लाहि इन्कुंतुम् स्वादिकीन् ।
(सू० २। आ० २३)

फ इल्लम् तफ्अलू वलन् तफ्अलू
फत्तकु आरल्लती वकू दुहन्नासु वल् हिजारा
ओइदत् लिल्ल काफ़िरीन् ।

(सू० २। आ० २४)

(९) व बरिशरिल्लजीन आमन् व अमि
लुस्स्वालिहाति अन्न लहुम् जन्नातिन्
तञ्जी मिन् तहः तिहल् अन्हार, कुल्लमा
रुज़िक्, मिन्हा मिन् समरतिरिज़्कन् कालू
हाज़ल्लजी रुज़िक्ना मिन् कल्लु व
उतूबिही मुतशाबिहा व लहुम् फ़ीहा
अज़्वाजुम्मुत्वःहरतुम् व हुम् फ़ीहा
ख़ालिदन् । (सू० २। आ० २५)

यह लोग अपने मालिक की शिक्षा पर हैं
और ये ही छुटकारा पाने वाले हैं ।

निश्चय जो काफ़िर हुए उन पर तेरा डराना
या न डराना समान है वे ईमान न लावेंगे ।

अल्लाह ने उनके दिलों (व) कानों पर मुहर
करदी और उनकी आँखों पर पर्दा है और उनके
वास्ते बड़ा अज्ञाब है ।

उनके दिलों में रोग है अल्लाह ने उनका
रोग बढ़ा दिया ।

जिसने तुम्हारे वास्ते पृथ्वी बिछौना और
आसमान की छत को बनाया ।

जो तुम उस वस्तु से संदेह में हो जो हमने
अपने पैगम्बर के ऊपर उतारी तो इसके सी एक
सूरत ले आओ और अपने साक्षी लोगों को
पुकारो अल्लाह के बिना जो तुम सच्चे हो ।

जो तुम न करो और कभी न करोगे तो उस
आग से डरो कि जिसका इन्धन मनुष्य और
पत्थर है, (जो) काफ़िरी के लिए तय्यार की
गई है ।

और आनन्द का सन्देश दे उन लोगों को
कि ईमान लाए और काम किए अच्छे, यह कि
उनके वास्ते बहिश्त हैं जिनके नीचे से चलती हैं
नहरें, जब उसमें से मेवों के भोजन दिये जावेंगे
तब कहेंगे कि वह वो वस्तु हैं जो हम पहले
इससे दिये गये थे और उनके लिए पवित्र
बीबीयां हैं, और वे सदैव वहां रहने वाले हैं ।

(१०) व अल्लम आदमल्लअस्माअ कुल्लाहा
सुम्म अरज़हुम् अलल् मलाइकति
फ़क़ाल अम्बउनी विअस्माइ हाउ-
लाइ इन्कुंतुम् स्वादिकीन् ।

(सू० २ । आ० ३१)

काल याा आदमु अम्बहुम् विअस्माए
हिम् फ़लम्मा अम्बाहुम विअस्माए हिम् काल
अलम् अकुल्लकुम् इनी अअलमुगैवस्समा-
वाति वल् अज़ि व अअलमु मा तुब्दुन व
मा कुंतुम् तक्तुमून् । (सू० २ । आ० ३३)

(११) इज़् कुल्ला लिल् मलाइकतिस्जुदू-
लिआदम फ़सजदू इल्ला इल्लीस अवा
वस्तक्बर व कान मिनल् काफ़रीन् ।

(सू० २ । आ० ३४)

(१२) व कुल्ला या आदमुस्कुन् अन्त व
ज़ौजुकजन्नत व कुला मिन्हा रगदन्
है शेतुमा वला तक्बा हाज़िहिश्श-
रत फ़तकूना मिनज़्ज़वालिमीन् ।

(सू० २ । आ० ३५)

फ़ अज़ल्लहुमशैत्वानु अन्हा फ़ अख़ज
हुमा मिम्मा काना फ़ीहि व कुल्लनःबित्वू
वअज़्ज़ुकुम् लिबअज़्ज़िन् अदुनुन्, वलकुम्
फ़िल् अज़्ज़े मुस्तकरून् वमताउन् इलाहीन् ।

(सू० २ । आ० ३६)

फ़तलक्का आदमु मिर्रिब्वही कलिमा
तिन् फ़ताब अलौहि । (सू० २ । आ० ३७)

(१३) वत्तकू यौमल् ता तज्जी नफ़सुन् अन्
नफ़सिन् शैअन् वला युक्बलु मिन्हा
शफ़ाअतुन् वला योख़ज़ु मिन्हाअदुलुन्
बला हुम् युन्सरून् । (सू० २ । आ० ४८)

आदम को सारे नाम सिखाए फिर फ़रिश्तों
के सामने करके कहा जो तुम सच्चे हो मुझे
उन्के काम बताओ ।

कहा हे आदम ! उनको उनके नाम बतादे
तब उसने बता दिए तो खुदा ने फ़रिश्तों से
कहा कि क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि निश्चय
मैं पृथ्वी व आसमान की छिपी वस्तुओं को
और प्रगट छिपे कर्मों को जानता हूँ ।

जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि बावा आदम
को दण्डवत् करो देखा सभी ने दण्डवत् किया
परन्तु शैतान ने न माना और अभिमान किया
क्योंकि वह भी एक काफ़िर था ।

हमने कहा कि ऐ आदम तू और तेरी जोरू
बहिश्त में रहकर आनन्द से जहां चाहो खाओ
परन्तु मत समीप जाओ उस वृक्ष के कि पापी
हो जाओगे ।

शैतान ने उनको डिगाया और उनको बहिश्त
के आनन्द से खो दिया तब हमने कहा उतरो
तुम्हारे में कोई परस्पर शत्रु है, तुम्हारा ठिकाना
पृथिवी है और एक समय तक लाभ है ।

आदम अपने मालिक की कुछ बातें सीख कर
पृथिवी पर आ गया ।

उस दिन से डरो कि जब कोई जीव किसी
जीव से भरोसा न रखेगा न उसकी शिकारिश
स्वीकार की जावेगी न उससे बदला लिया जावेगा
और न वे सहाय पावेंगे ।

(१४) वइज् आतैना मूसल्किताव वल्
फुर्कान । (सू० २ । आ० ५३)

फकुल्ना लहुम् कूनू किरदनन् खासिईन्,

फजअल्नाहा नकाल्लिमा दैनयदैहा
वमा खल्फहा व मौएज्जतल्लिल् मुत्तकीन् ।

(सू० २ । आ० ६५, ६६)

(१५) कज्जालिक युहयिन्लाहुल् मौता व
युरीकुम् आयातिही ल अल्लकुम्
तअर्कलून् । (सू० २ । आ० ७३)

(१६) उलाइका अस्थावुल् जन्नति, हुम् फीहा
खालिदन् । (सू० २ । आ० ८०)

(१७) व इज् अखज्जना मीसाककुम् ला
नस्फिकून दिमाअकुम् व ला तुखिजून
अन्फुसकुम् मिन् दियारिकुम् सुम्म
अर्त्तुम् व अन्तुम् तश्ददन् ।

सुम्मअन्तुम् हाउलाइ तक्तुलून
अन्फुस कुम् व तुखिजून फरीकम् मिन्कुम्
मिन् दियारिहिम् । (सू० २ । आ० ८४, ८५)

(१८) उलाइकल्लजी नशतर वुल् हयात
हुनिया बिल् आखिर्गति, फला युखफ्
फकु अन्हुमुल् अज्जावु वलाहुम्
युन्सरुन् । (सू० २ । आ० ८६)

(१९) लकद आतैना मूसल् किताव व कफफना
मिम्बादिही विरुसुल्, व आतैना ईसन्न
मर्यमल्लैयिनाति व ऐयदुनाहु विरूहिल्
कदुमि, अफकुल्लमा जाअकुम् रसलुम्
बिमा ला तह्हा अन्फुसुकुमुस्तकवर्तुम्, फ
फरीकन् कज्जवतुम् व फरीकन्
तन्नतुलून् । (सू० २ । आ० ८७)

(और जब) हमने मूसा को किताब और
मोजिजे (नुभोती) दिये ।

हमने उनको कहा कि तुम निन्दित बंदर
हो जावा ।

यह एक भय दिया जो उनके सामने और
पीछे थे उनको, और शिक्षा ईमानदारों को ।

इस तरह खुदा मुर्दों को जिलाता है और
तुमको अपनी निशानियाँ दिखलाता है कि
तुम समझो ।

वे सदैव काल बहिरत अर्थात् बैकुण्ठ में वास
करने वाले हैं ।

जब हमने तुमसे प्रतिज्ञा कराई न गहाना
लोहू अपने आपस में और किसी को अपने
आपस के घरों से न निकालना फिर प्रतिज्ञा की
तुमने, इसके तुम ही साची हो ।

फिर तुम वे लोग हो कि अपने आपस को
मार डालते हो एक फ्रिके को आप में से घरों
उनके से निकाल देते हो ।

ये वे लोग हैं कि जिन्होंने आखरत के बदले
जिन्दगी यहाँ की मोल ले ली उनसे पाप कभी
हलका न किया जावेगा और न उनको सहायता
दी जावेगी ।

निश्चय हमने मूसा को किताब दी और
उसके पीछे हम पैगम्बर को लाये और मरियम
के पुत्र ईसा को प्रकट मौजिजे अर्थात् दैवीशक्ति
और सामर्थ्य दिये उसके साथ रूहुलवुद्दम् के,
जब तुम्हारे पास उम वस्तु सहित पैगम्बर आया
कि जिसको तुम्हारा जी चाहता नहीं फिर तुमने
अभिमान किया एक मत को झुठलाया और एक
को मार डालते हो ।

(२०) व कानू मिन कळु यस्तफ्रित, हून
अलल् लजीन कफरू, फलम्मा जा
अहुम् मा अफू कफरू विही, फ
लअनतुल्लाहि अलल् काफिरीन् ।

(सू० २ । आ० ८८)

(२१) वुशग लिल् मोमिनीन् ।

मन् काना अद्वुल्लिहाहि व मलाइकतिही
व रुसुलिही व जिब्रील व मीकाल फ इन्नल्लाह
अद्वुल्लिहाहि अलल् काफिरीन् ।

(सू० २ । आ० ६७, ६८)

(२२) वकूलू हिन्वतुन् नसिफलकुम् खत्वा
याकुम् व सनजीदुल् मु. हूमिनीन् ।

(सू० २ । आ० ५८)

(२३) व इजिस्तस्का मूमा लिर्काभिही फ कुल्
नज्जरिब् विअस्वाकल् हजर, फन् फज्जर्न्
मिन् हुगनता अश्रता ऐना ।

(सू० २ । आ० ६०)

(२४) वल्लाहु यदतम्बु विगहति ही में
यशाउ ।

(सू० २ । आ० १०५)

(२५) वहकमीरुम्मिन् अहलिल् कितावि
लौ यरुद्दुनकुम् मिम् वादि ईमानि-
कुम् कुफ्फारन् हमदन् ।

(सू० २ । आ० १०८)

(२६) फ ऐनमा तुवल्लू फमम्म वज्हुल्लाहि ।

(सू० २ । आ० ११५)

(२७) वदीउस्मावाति वल् अज्जै, व इजा
कज्जा अम्रन् फ इन्नमा यकूलु लह
कुन् फयकून् ।

(सू० २ । आ० ११५)

(२८) इज् जअन्नल् दैत ममावतन् लिन्नासि
व अमनन्, वत्ताखजू, मिम् मकार्मि
इब्राहीम मुस्वल्लन् ।

(सू० २ । आ० १२५)

और इससे पहले काफिरों पर विजय चाहते
थे जो कुछ पहिचाना था जब उनके पास वह
आया भट काफिर हो गये, काफिरों पर लानत
है अल्लाह की ।

आनन्द का संदेशा ईमानदारों को ।

✓ अल्लाह फरिश्तों, पैगम्बरों, जिवरईल और
मीकाइल का जो शत्रु है अल्लाह भी ऐसे काफिरों
का शत्रु है ।

और कहो कि क्षमा माँगते हैं हम क्षमा करेंगे
तुम्हारे पाप और भलाई करने वालों के ।

जब मूमा ने अपनी क्रीम के लिये पानी माँगा
हमने कहा कि अपना असा (दंड) पत्थर पर
मार उसमें से बारह चश्में बह निकले ।

और अल्लाह खाम करना है जिसको चाहता
है साथ दया अपनी के ।

ऐसा न हो कि काफिर लोग ईश्या करके
तुम्हो ईमान से फेर दें क्योंकि उनके ईमान
वालों में से बहुत से दोस्त हैं ।

तुम जिधर अपना मुंह करो उधर ही मुंह
अल्लाह का है ।

जो आसमान और भूमि का उत्पन्न करने-
वाला है जब वो कुछ करना चाहता है (यह नहीं
कि उसको करना पड़ता है) किन्तु उसे कहता है
कि होजा वस हो जाता है ।

जब हमने लोगों के लिये काबे को पवित्र
स्थान गृह देने वाला बनाया तुम नमाज के लिये
इब्राहीम के स्थान को पकड़ो ।

(२६) मैयर्गबु अन् मिल्लति इब्राहीम इब्ना
मन् सफिह नफ्सहू, वलकदिस्त्वफैनाहु
फिद् दुनिया, व इन्नहू फिल् आखि-
रति लमिनस्स्वालिहीन् ।

(सू० २ । आ० १३०)

(३०) कद् नरा तकल्लुव वज्हक फिस्स-
माए फला नुवल्लियन्नक किब्लतन्
तर्वाहा फ वल्लि वज्हक शत्वरल्
मस्जिदिल् हरा-मि व हैसु माकु तुम्
फ वल्लू वुजूहकुम् शत्वरहू ।

(सू० २ । आ० १४४)

(३१) वला तकूलू लिमैँ युन्नतलु फी सवी
लिब्ल्लाहि अम्वातुन् वल् अ. ह्याउन् ।

(सू० २ । आ० १५४)

(३२) इन्नल्लाह शदीदुल् अजाव ।

वला तत्तबिऊ . खुत्वुवातिशैतानि,
इन्नहूलकुम् अद्वुम्भुवीन् ।

इअमा यामुरुकुम् बिस्सइ वल् फःशा-इ
व अन् तकूलू अल्ल्लाहि माला तअलमून् ।

(सू० २ । आ० १६५, १६८, १६९)

(३३) इअमा हरम अलकुमुल् मैतत वद्दम
व लह्वल् खिजीर, व मा उहिल्लविही
लि गैरिल्ल्लाहि । (सू० २ । आ० १७३)

(३४) उहिल्ल लकुम् लैलतस्स्वया मिरफसु
इला निसाइकुम्, हुन्न लिबासुल्लकुम् व
अन्तुम् लिबासुल्लहुन्न, अलिमल्लाहु अन्नकुम्
कुंतुम् तत्तानून अन्फुसकुम् फताब अलकुम्
व अफा अन्कुम् फल् आन वाशिरुहुन्ना
वन्तगू मा कतबल्लाहु लकुम्, वकुलू वश्रबू हत्ता
यतवैयन लकुमुल् खैत्वुल् अब्यज़् मिनल्
खैत्विल् अस्वदि मिनल् फजर ।

(सू० २ । आ० १८७)

वह कौन मनुष्य हैं जो इब्राहीम के दीन से
फिर जावे परन्तु जिसने अपनी जान को मूर्ख
बनाया और निश्चय हमने दुनियां में उसी को
पसन्द किया और निश्चय आखिरत में वो ही
नेक है ।

निश्चय हम तेरे मुख को आसमान में फिरता
देखते हैं अवश्य हम तुझे उस क़िबले को फेरेंगे
कि पसन्द करे उसको, बस अपना मुख मस्जिदु-
ल्हराम की ओर फेर, जहां कहीं तुम हो, अपना
मुख उसकी ओर फेर लो ।

जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे जाते हैं
उनके लिये यह मत कहो कि ये मृतक हैं किन्तु
वे जीवित हैं ।

और यह कि अल्लाह कठोर दुःख देनेवाला है ।

शयतान के पीछे मत चलो निश्चय वो तुम्हारा
प्रत्यक्ष शत्रु है ।

उसके बिना और कुछ नहीं कि बुराई और
निर्लज्जता की आज्ञा दे और यह कि तुम कहो
अल्लाह पर जो नहीं जानते ।

तुम पर मुर्दार, लोहू और गोशत सूअर का
हराम है और अल्लाह के बिना जिस पर कुछ
पुकारा जावे ।

रोजे की रात तुम्हारे लिये हलाल की गई
कि मदनोत्सव करना अपनी बीबियों से, वे
तुम्हारे वास्ते पर्दा हैं और तुम उनके लिये पर्दा
हो, अल्लाह ने जाना कि तुम चोरी करते हो
अर्थात् व्यभिचार बस फिर अल्लाह ने क्षमा
किया तुमको बस उनसे मिलो और दूढ़ो जो
अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है अर्थात्,
संतान, खाओ पीओ यहाँ तक कि प्रगट हो तुम्हारे
लिये काले तागे से सुपेद तागा वा रात से ज-
दिन निकले ।

(३५) व कातिलू फी सबीलिल्लाहिल्लजीन
युकातिलूनकुम्;

वक्रतुलूहुम् हैसु सक्रिप्रतुमूहुम्, अल्
फित्तनु अशद्दु मिनल् क्तल्ल;

व कातिलूहुम् हत्ता लातकून फित्तनु
व यकूनद्दीनु लिल्लाहि;

फमनिअतदा अलैकुम् फअत्तदू अलैहि
बिमिस्लि मअतदा अलैकुम् ।

(सू० २ । आ० १६०, १६१, १६३, १६४)

(३६) वल्लाहु लायुहिहबुलू फसाद् ।

(सू० २ आ० २०५)

या ऐ युहल्लजीन आमनुदखुलू
फिस्सिल्मि काफ्तन् । (सू० २ । आ० २०८)

(३७) वल्लाहु यर्जुकु मैयशाउ विगैरि हिमाव

(सू० २ । आ० २१२)

(३८) यस्अलूनक अनिल् महीज़ि कुल् हुव
अजन् फअत्तजिलुन्निमाअ फिल् मही
ज़ि, वला तक्रबू हुन्न .हत्ता यत्तवहुर्न
फ इजा तत्वःहर्न फातू हुन्न मिन् .हैसु
अमर कुमुल्लाहु ।

निसाउकुम् .हसु न्लकुम् फातू .हर्सकुम्
अन्नाशेतुम् ।

ला युआखिजुकुमुल्लाहु विल्लरिव फी
ऐमानिकुम् । (सू० २ । आ० २२२, २२३, २२५)

(३९) मन् जल्लजी युक्रिजुल्लाह कर्ज़न्
हसनन् फ युज़्वाइफहू लहू अज़्वाफन्
कसीरा । (सू० २ । आ० २४५)

अल्लाह के मार्ग में लड़ो उनसे जो तुमसे
लड़ते हैं ।

मार डालो तुम उनको जहाँ पाओ । कतल
से कुफ़ बुरा है ।

यहाँ तक उनसे लड़ो कि कुफ़ न रहे और
होवे दीन अल्लाह का ।

उन्होंने जितनी शियादती करी तुम पर
उतनी ही तुम उनके साथ करो ।

अल्लाह ऋण्डे को मित्र नहीं रखता ।

ऐ लोगो जो ईमान लाये हो इस्लाम में
प्रवेश करो (पूरे पूरे)

खुदा जिसको चाहे अनन्त रिज़क़ देवे ।

प्रश्न करते हैं तुमसे रजस्वला को, कह वो
अपवित्र हैं पृथक रहो ऋतु समय में उनके समीप
मत जाओ जब तक कि वे अपवित्र न हों, जब नहा
लेवें उनके पास उस स्थान से जाओ खुदा ने
आज्ञा दी ।

तुम्हारी बीवियाँ तुम्हारे लिये खेतियाँ हैं बस
जाओ जिस तरह चाहो अपने खेत में ।

तुमको अल्लाह लसख (बेकार, व्यर्थ) शपथ
में नहीं पकड़ता ।

वो कौन मनुष्य है जो अल्लाह को उधार देवे
अच्छा बस अल्लाह द्विगुण करे उसको उसके
वास्ते ।

(४०) फ मिनहुम् मन् आपन व मिन हुम्
मन कफा, व लौरा अल्लाहु मक्
ततलू व लाकिनल्लाह यफ् अलु मा
युगीद । (सू० २ । आ० २५३)

(४१) लहू माफिस्समात्राति वमा फिल्
अज़िव वसिआ कुसीयुहु स्समात्राति
वल् अज़र्व । (सू० २ । आ० २५५)

(४२) इन्नल्लाह याती विशशमित् मिनल्
मश्रिकि फाति बिहा मिनल् मश्रिबि
फ बुहितल्लजी कफरा, वल्लाहु ला
यहदिल् कौमज़्ज़ालिमीन् ।
(सू० २ । आ० २५८)

[४३] काल फलुज् अर्वातम् मिनरैरि
फबुहुन्न इलैक, सुम्मज्ज़ल् अना
कुल्लि जवालिम् मिनहुन्न जुज्ज़न्
सुम्मदु हुन्न यातीनक सअयन् ।
(सू० २ आ० २६०)

[४४] योतिल् हिक्मत में यशा ।
(सू० २ । आ० २६६)

[४५] फ यफिफु लि में यशाउ व
युअज़्ज़िनु में यशाउ, वल्लाहु अना
कुल्लि शैइन कदीर ।
(सू० २ आ० २८०)

[४६] कुल् अउनब्बिउकुम् विखैगिम् पिन
जालिकुम्, लिल्लजी नत्तकौ इन्द
रन्बिहम् जन्नतुन् तज्जी मिन
तःतिदल् अन्हारु खानिदीन फीहा
व अज़्ज़ालुम् मुन्वःहरतुम् व
रिज़्ज़ालुम्मिनल्लाह, वल्लाहु वस्वीरुम्
बिल् इबाद । (सू० ३ । आ० १४)

उनमें से कोई ईमान लाया और कोई
काफिर हुआ जो अल्लाह चाहता न लड़ते, जो
चाहता है अल्लाह करता है ।

जो कुछ आसमान और पृथ्वी पर है सब
उसी के लिये है । उसकी कुरसी ने आसमान और
पृथ्वी को समा लिया है ।

अल्लाह सूर्य को पूर्व से लाता है बस तू
पश्चिम से ले आ बस जो काफिर हैरान हुआ
था निश्चय अल्लाह पापियों को मार्ग नहीं
दिखलाता ।

कहा चार जानवरों से ले उनकी सुरत पहि-
चान रख, फिर हर पहाड़ पर उनमें से एक २
टुकड़ा रख हे फिर उनको बुला दौड़ने तेरे पास
चले आवेंगे ।

जिसको चाहे नीति देता है ।

वह कि जिसको चाहेगा क्षमा करेगा जिसको
चाहेगा दण्ड देगा क्योंकि वह सब वस्तु पर
बलवान है ।

कह इससे अच्छी और क्या परहेज़गारों को
खबर दूं कि अल्लाह की ओरसे बहिरतें हैं जिनमें
नहरे चलती हैं उन्हीं में सदैव रहने वाली शुद्ध
योधियां हैं अल्लाह की प्रसन्नता से, अल्लाह
उनको देखने वाला है साथ बन्दों के ।

(४७) इन्नदीन इन्दल्लाहिल् इस्लाम्

(सू० ३। आ० १८)

(४८) वुफयेथन् कुल्लु नफ्मिम्मा कमबत् व
हुम् ला युज़्जलमून्

कुलिल्लाहुम्म मालिकल्मुल्कि तोति-
ल्मुल्क मन् तशाउ व तन्जिउल्मुल्क
मिम्मन् तशाउ व तुइज़्जु मन् तशाउ
वताजिल्लु मन् तशाउ वियदिकल्खैर,
इन्नक अला कुल्लि शैइन् कदीर

तूलिजुल्लैल फिन्नहारि व तूलिजुन्न
हारि फिल्लैल, व तुग्गिजुल् हैय
मिनल् मैयति व तुग्गिजुल् मैयत मिनल्
है, तर्जुकु मन् तशाउ बिगैरि हिसाब
ला यत्तखिजिल् मोमिनूनल् काफिरीन
आलियाअ मिन दूनिल् मोमिनीन्, व
मै यफ्अल् जालिका फलैमा मिनल्लाहि
फी शैइन्

(सू० ३। आ० २४। २५। २६। २७)

कुल्इकतुम् तुहिह्वन्नल्लाह फत्तबिउनी
युह्विक्कुमुल्लाहु व यफिर्लकुम् जुनुव
कुम्, वल्लाहु गफूरुर्हीम्

(सू० ३। आ० ३०)

(४९) इज़्ज कालतिल् मलाइकतु याा मर्यमु
इन्नल्लाहस्त्वफाकि व न्वःहरकि
वस्त्वफाकि अला निसाइल् आलमीन्

(सू० ३। आ० ५१)

(५०) फ इन्नमा यकूलु लह कुन् फयकून्

(आ० ४६)

मकरू व मकरल्लाहु, वल्लाहु खैरुल्
माकिरीन् (सू० ३। आ० ५३)

निश्चय अल्लाह की ओर से दीन
इस्लाम है।

प्रत्येक जीव को पूरा दिया जावेगा जो कुछ
उसने कमाया और वे न अन्याय किये जावेंगे।

कह या अल्लाह तू ही मुल्क का मालिक है
जिसको चाहे देता है जिससे चाहे छीनता है
जिसको चाहे प्रतिष्ठा देता है जिसको चाहे
अप्रतिष्ठा देता है सब कुछ तेरे ही हाथ में है
प्रत्येक वस्तु पर तू ही बलवान है।

रात को दिन में और दिन को रात में पैठाता
है और मृतक को जीवित से जीवित को मृतक
से निकालना है और जिसको चाहे अनन्त
अन्न देता है।

मुसलमानों को उचित है कि काफिरों को
मित्र न बनावे सिवाय मुसलमानों के जो कोई यह
करें बस वह अल्लाह की ओर से नहीं।

कह जो तुम चाहते हो अल्लाह को, तो
पक्ष करो मेरा, अल्लाह चाहेगा तुम को, और
तुम्हारे पाप क्षमा करेगा। निश्चय करुणामय है।

जिस समय कहा फरिश्तों ने कि ऐ मर्यम
तुम्हारे अल्लाह ने पसन्द किया और पवित्र किया
ऊपर जगत् की स्त्रियों के।

उसको कहना है कि हो बस हो जाता है।

काफिरों ने धोखा दिया। ईश्वर ने धोखा
दिया, ईश्वर बहुत मकर करने वाला है।

(५१) अलैयक्फियकुम् ऐयुमिद्दकुम् रब्बुकुम्
बिसलासति आलाफिम् मिनल्
मलाइकति मुँजलीन् (सू० ३। आ० १२३)

क्या तुमको यह बहुत न होगा कि अल्लाह
तुमको तीन हजार फरिश्तों के साथ सहाय देवे।

(५२) वन्सुर्ना अलल् कौमिल् काफिरीन्
(सू० ३। आ० १४६)

और काफिरीं पर हमको सहाय कर।

बलिल्लाहु मौलाकुम्, व हुव खैरुन्ना
सिरीन् (सू० ३। आ० १४६)

अल्लाह तुम्हारा उत्तम सहायक और
कारसाज है।

वलइन् कुतिल्लुम् फी सबीलिल्लाहि
औमुत्तुम् लिमरिफ़रतुम् मिनल्लाहि
व रब्बतुन् खैरुन् (मिम्मा यज्मरुन्)
(सू० ३। आ० १५६)

जो तुम अल्लाह के मार्ग में मारे जाओ या
मर जाओ अल्लाह की दया बहुत अच्छी है।

(५३) व मा कानल्लाहु लियुत्वलिअकुम्
अलल् गैबि वलाफिन्नल्लाह यज्तबी
मिर्सुलिही में यशाउ, फ आमिन्
बिल्लाहि व रुसुलिही
(सू० ३। आ० १७८)

और अल्लाह तुमको परोक्ष नहीं करता
परन्तु अपने पैगम्बरों से जिसको चाहे पसन्द
करे वस अल्लाह और उसके रसूल के साथ
ईमान लाओ।

(५४) या ऐ युहल्लजीन आमनुस्वबिरू व
स्वाबिरू व राबित्वू, वत्तकुल्लाह ल
अल्लकुम् तुप्पलेहून् (सू० ३। आ० १६६)

ऐ ईमान वालों संतोष करो परस्पर थामे रखो
और लड़ाई में लगे रहो अल्लाह से डरो कि तुम
छुटकारा पाओ।

(५५) तिल्क हुद्दुल्लाहि वमें युत्विइल्लाह
व रसूलहू युदखिल्हु जन्नातिन् नज्जी
मिन् ताःतिहल्अन्हारू (खालिदीना
फीहा) व जालिकल् फूजुल्अज़ीम्।
(सू० ४। आ० १३)

ये अल्लाह की हद्दें हैं जो अल्लाह और
उसके रसूल का कहा मानेगा वह बहिश्त में
पहुँचेगा जिनमें नहरें चलती हैं और यही बड़ा
प्रयोजन है।

व मैं यअस्विल्लाह व रसूलहू व यत
अद्द हुद्दहू युदखिल्हु नारन् खालि
दीना फीहा, व लहू अज़ाबुम् मुहीन्
(सू० ४। आ० १४)

जो अल्लाह की और उसके रसूल की आज्ञा
भंग करेगा और उसकी हद्दों से बाहर हो जावेगा
वो सदैव रहने वाली आग में जलाया जावेगा
और उसके लिये खराब करने वाला दुःख है।

(५६) इन्नल्लाह ला यज़्जलिमु मिस्काल
ज़रतिन्, व इन् तकु हसनतें युज़्जा
इफ्हा वयोतिमिन् लदुन्हु अज़न् अज़ीमा
(सू० ४। आ० ४०)

और एक त्रसरेणु के बराबर भी अल्लाह
अन्याय नहीं करता और जो भलाई होवे उसका
दुगुण करेगा उसको ।

(५७) फ इज़ा बरज़्जु मिन् इंदिका बैयता
त्वाइफतुम् मिन्हुम् गैरल्लज़ी तकूलु,
वल्लाहु यक्तुबु मा युबैयतून्
(सू० ४। आ० ८१)

जब तेरे पास से बाहर निकलते हैं तो तेरे
कहने के विवाय (विपरीत) सोचते हैं अल्लाह
उनकी सलाह को लिखता है ।

अल्लाहु अर्कसहुम् बिमा कसबू,
अतुरीदून् अन् तःदू मन् अज़्जल्लल्लाहु व
मैं युज़्जलि लिज़्ज़ाहु फलन् तजिद
लहू सबीला
(सू० ४। आ० ८८)

अल्लाह ने उनकी कमाई वस्तु के कारण से
उनको उलटा किया क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह
के गुमराह किये हुए को मार्ग पर लाओ बस
जिसको अल्लाह गुमराह करे उसको कदापि
मार्ग न पावेगा ।

(५८) (फ इल्लम्) यकुफ्फू ऐदीहुम् फ
खुजूहुम् वक्रतुलूहुम् हैसु सक्तिप्रतुमूहुम्
(सू० ४। आ० ९१)

और अपने हाथों को न रोके तो उनको पकड़
लो और जहां पाओ मार डालो ।

वमा कान लिमोमिनिन् ऐयक्रतुल
मोमिनन् (इल्ला खत्व अन्), व मन्
कतल मोमिनन् खत्वअन् फ तःरीरु
रक़बतिम् मोमिनतिन् व दियातुम्
मुसल्लमतुन् इला अःलिही इल्ला ऐय
स्वदकू

✓ मुसलमान को मुसलमान का मारना योग्य
नहीं जो कोई अनजाने से मार डाले बस एक
गर्दन मुसलमान का छोड़ना है, और खून बहा
(रक्त बंद) उन लोगों की ओर सौंपी हुई जो उस
कौम से हों, और तुम्हारे लिये दान कर दें;

(फ इन् कान मिन् कौमिन् अद्
विल्लकुम्) (सू० ४। आ० ९२)

(जो दुष्मन की कौम से है)

मैं यक्रतुल् मोमिनम्मुतअम्मिदन् फ
जज़ाउहू जहन्नमु खालिदन् फीहा व
गज़िबल्लाहु अलैहि व लअनहू ।
(सू० ४। आ० ९३)

✓ और जो कोई मुसलमान को जान कर मार
डाले वह सदैव काल दोख में रहेगा उस पर
अल्लाह का क्रोध और लानत है ।

(५६) वमैं युशाकिकिर्रसूल भिम्वाअदि मा
तवैयन लहुल्हुदा वयत्तत्रिअ गैर
सवीलिल् मोमिनीन (नुवाल्लही मा
तवल्ला) व नुस्लिही जहन्नम्

(सू० ४ । आ० ११५)

(६०) मैं यक्फुर् बिल्लाहि व मलाइकतिही
व कुतुबिही व रुसुलिही वल् यौमिल्
आखिरि फकद् ज्वल्लज्वलालम् वईदा ।

इन्नल्लजीन आमनू सुम्म कफरू
सुम्म आमनू सुम्म कफरू सुम्मज्जाद्
कुफन् लम्यकुनिल्लाहु लियग्गिर
लहुम् वला लियह् दियहुम् सबीला ।

(सू० ४ । आ० १३६-३७)

(६१) इन्नल्लाह जामिउल्मुनाफिकीन वल्
काफिरीन फी जहन्नम जमीआ ।

इन्नल् मुनाफिकीन युखादिऊन
ल्लाह व हुव खादिउ हुम् ।

या ऐयुहल्लजीन आमनू ला तत्त-
खिजुल् काफिरीन औलियाअ मिन्
दूनिल् मोमिनीन् ।

(सू० ४ । आ० १४०-१४२-१४४)

(६२) या ऐयुहन्नासु कद् जाअकुमुर्सुलु
बिल् हक्किर् मिर्रब्बिकुम् फ आमिन्
(खैरल्लकुम्)

इन्नमल्लाहु इलाहुन् वाहिदुन् ।

(सू० ४ । आ० १७०-१७१)

और शिक्षा प्रकट होने के पीछे जिसने रसूल
से विरोध किया और मुसलमानों से विरुद्ध पक्ष
किया अवश्य हम उसको दोज़ख में भेजेंगे ।

जो अल्लाह फरिश्तों किताबों रसूल और
कयामत के साथ कुफ्र करे निश्चय वह गुमराह है ।

निश्चय जो लोग ईमान लाये फिर काफिर
हुए फिर २ ईमान लाये पुनः फिर गये और कुफ्र
में अधिक बढ़े अल्लाह उनको कभी जमा नहीं
करेगा और न मार्ग दिखलावेगा ।

निश्चय अल्लाह बुरे लोगों और काफिरों को
जमा करेगा दोज़ख में ।

निश्चय बुरे लोग धोखा देने हैं अल्लाह को
और उनको वह धोखा देता है ।

ये ईमान वाला मुसलमानों को छोड़ काफिरों
को मित्र मत बनाओ ।

ये लोगो निश्चय तुम्हारे पास सत्य के साथ
खुदा की ओर से पैगम्बर आया बस तुम उन
पर ईमान लाओ ।

अल्लाह मानुद अकेला है ।

(६३) हुर्मित् अलैकुमुल्मैततु वद्दमु व
व ल.ह्लुल् खिजीर वमा उहिल्ल लिगै-
रिल्लाहि बिही वल्मुन्खनिक्तु वल्
मौकू.जतु वल् सुतरद्दियतु वन्नन्वी.हतु
वमा अकलस्सवुउ । (सू० ५ । आ० ३)

(६४) व अकृञ्चतुमुल्लाह कृञ्चन् हसनन्
ल उकफ्फिरन्न अन्कुम् मैयिआतिकुम्
वलउद्खिलन्नकुम् जन्नातिन् ।

(सू० ५ । आ० १२)

(६५) यग्गिरु लिमं यशाउ व युअङ्गिञ्चु में
यशा

अताकुम् मालम् योति अ.हदम् पिनल्
आलामीन् । (सू० ५ । आ० १८-२०)

(६६) अन्वीउ.ल्लाह व अन्वीउ.रसूल ।

(सू६ ५ । आ० ६२)

(६७) अफल्लाहु अम्मा मलफ, वमन् आद
फ यन्तकिमुल्लाहु पिन्हु ।

(सू० ५ । आ० ६५)

(६८) गमन् अज़लमु पिम्मनिफ्तरा अलल्लाहि
कजिबन् औ काला ऊहिय इलैय
वलम् यूह. इलैहि शैउन्, व मन् काल
सउन्जिलु मिस्ल पा अञ्जलल्लाहु ।

(सू० ६ । आ० ६४)

(६९) लकद् खलन्नकुम् सुम्म स्वौवर्नाकुम्
सुम्म .कुल्ना लिल् मलाइकतिस्जुद्
लिआदम फसजद् इल्ला इब्लीस, लम्
यकुम्पिनस्साजिदीन ।

तुम पर हराम किया गया मुर्दार, लोह, सूअर का
मांस, जिस पर अल्लाह के बिना कुछ और पढ़ा
जावे, गला घोंटे, लाठी मारे, ऊपर से गिर पड़े,
सींग मारे, और दरंद का खाया हुआ ।

और अल्लाह को अच्छा उधार दो अवश्य में
तुम्हारी बुराई दूर करूँगा और तुम्हें बहिश्तों
में भेजूँगा ।

जिसको चाहता है नमा करता है जिसको
चाहे दुःख देता है ।

जो कुछ किसी को भी न दिया वह
तुम्हें दिया ।

आज्ञा मानो अल्लाह की और आज्ञा मानो
रसूल की ।

अल्लाह ने माफ किया जो हो चुका और
जो कोई फिर करेगा अल्लाह उससे बदला
लेगा ।

और उस मनुष्य से अधिक पापी कौन है जो
अल्लाह पर भूँठ बाँध लेता है और कहता है कि
मेरी ओर वही की गई परन्तु वही उसकी ओर
नहीं की गई और जो कहता है कि मैं भी उता-
रूँगा कि जैसे अल्लाह उतारता है ।

अवश्य हमने तुम को उत्पन्न किया फिर
तुम्हारी सूरतें बनाईं फिर हमने फरिश्तों से कहा
कि आदम को सिजदा करो, बस उन्होंने सिजदा
किया परन्तु शयतान सिजदा करने वालों में से न
हुआ ।

काल मा मनअक अल्लातस्जुद इज्
अमर्तुक, काल अन खैरुमिन्हु खल-
कनी मिन् नारिन् व खलकहू मिन्वीन्
काल फाहवित्व मिन्हा फमा यकूनु
लक अन् ततकब्बर फीहा ।

काल अन्जिनी इला यौमि युब्असून् ।

काल इन्नक मिनल् मुज्जिरीन् ।

काल फविना अग्रैतनी लअकूउदन्न
लहुम् स्विरातकन्मुस्तकीम् ।

वला तजिदु अन्नसहुम् शाकिरीन् ।

काल फाखुज मिन्हा यज्ऊमम् मद्दूरन्,
लमन् तविअक मिन्हुम् लअम्लअन्न
जहअम मिन्कुम् अज्मईन् ।

(सू० ७ । आ० ११ । १२ । १३ । १४ । १५
१६ । १७ । १८)

(७०) इन्न रब्बकुमुल्लाहुल्लजी खलकस्समा
वाति वल् अर्ज्व फी सिचति ऐयामिन्
सुम्मस्तवा अलल् अशि ।

तद्दु रब्बकुम् तज्जर्अन् ।

सू० ७ । आ० (५४ । ५५)

(७१) वला तअसौफिल् अजिन् मुफ्सीदीन् ।
(सू० ७ । आ० ७४)

(७२) फ अल्का अस्वाहु अश्जा हिय
सुअवानुम्मुवीन् । सू० ७ । (आ० १०७)

(७३) फ अर्सल्ला अलैहि मुच्चूफान वल्
जराद वल् कुम्मल वज्जवफादिअ वद्दम
फंतकम्ना मिन्हुम् फ अग्रकनाहुम्
फिल् यम्मि

कहा जब मैंने तुझे आज्ञा दी फिर किसने
रोका कि तूने सिजदा न किया, कहा मैं उससे
अच्छा हूँ तूने मुझ को आग से और उसको मिट्टी
से उत्पन्न किया ।

कहा बस उसमें से उतर यह तेरे योग्य नहीं
है कि तू उसमें अभिमान करे ।

कहा उस दिन तक ढील दे कि कब्रों में से
उठाये जावें ।

कहा निश्चय तू ढील दिये गयों से है ।

कहा बस इसकी क्रमम है कि तूने मुझको
गुमराह किया अवश्य मैं उनके लिये तेरे सीधे
मार्ग पर बैठूंगा ।

और प्रायः तू उनको धन्यवाद करने वाला न पावेगा

कहा उससे दुर्दशा के साथ निकल अवश्य जो
कोई उनमें से तेरा पक्ष करेगा तुम सब से दोज्ज
को भरूंगा ।

निश्चय तुम्हारा मालिक अल्लाह है जिसने
आसमानों और पृथिवी को छः दिन में उत्पन्न
किया फिर करार पकड़ा अर्श पर ।

दीनता से अपने मालिक को पुकारो ।

मत फिरो पृथिवी पर ऋगड़ा करते ।

बस एक ही बार अपना असा डाल दिया और
वह अजगर था प्रत्यक्ष ।

बस हमने उस पर मेंह तूफान भेजा टीढ़ी,
चिचड़ी और मेढ़क और लोह ।

बस हमने उनसे बदला लिया और उनको डुबा
दिया दरियाव में ।

वजावज़ना बनी इस्राईलबःर

इन्नहाउलाइ मुतब्वरुम् माहुम् फ्रीहि
व वात्विलुम्माकानु यअमलून्

(सू० ७। आ० १३३। १३६। १३८। १३९)

(७४) फ सौफ तरानी, फलम्मा तजल्ला
रब्बुहू लिल् जवलि जअलहू दक्कन् व
खर्रमूसा स्वइका (सू० ७। आ० १४३)

(७५) वज़्ज़ूरुब्बरु फीनफूसिक तज़्ज़ूरुअन्
व खीफतन् वदूनल् जःरि मिनल् कौलि
विल् गुदूवि वल् अस्वाल्
(सू० ७। आ० २०५)

(७६) यस्अलूनक अनिल् अन्फाल, कुलिल्
अन्फालु लिब्नाहि वरुसल्ल, फत्तकुल्लाह
(सू० ८। आ० १)

(७७) व यक्त्वअ दाविरिल् काफिरीन्
(सू० ८। आ० ७)

अन्नी मुमिद्दुकुम् विअल्फिमिनल्म
लाइकति मुर्दिफीन् (सू० ८। आ० ६)
स उल्की फी कुलूबिल्लजीन कफूरुर्वि
फज़्ज़रिबू फौकल् अअनाकि वज़्ज़रिबू
मिन्हुम् कुल्ल बनानिन् (सू० ८। आ० १२)

(७८) अन्नल्लाह मअल्मोमिनीन्

या ऐ युहल्लजीन आमनुस्तजीबू
लिब्नाहि व लिर्रसल्ल

याऐ युहल्लजीन आमनू लातखूनुल्लाह
वरुसल्ल व तखूनू अमानातिकुम्

व यम्कुरुल्लाहु वल्लाहु खैरुल्माकिरीन्
(सू० ८। आ० १६। २४। २७। ३०)

और हमने बनी इसराईल को दरियाब से
पार उतार दिया ।

निश्चय वह दीन भूँठा है कि जिसमें हैं
और उनका कार्य भी भूँठा है ।

बस तू मुझको अलवत्ता देख सकेगा जब
प्रकाश किया उसके मालिक ने पहाड़ की ओर
उसको परमाणु २ किया गिर पड़ा मूसा बेहोश ।

और अपने मालिक को दीनता डर से मन
में याद कर धीमी आवाज से सुबह को शाम
को ।

प्रश्न करते हैं तुम को लूटों से कह लूटें
वास्ते अल्लाह के और रसूल के और डरो
अल्लाह से ।

और काटे जड़ काफिरी की ।

मैं तुमको सहाय दूंगा साथ सहस्र फरिश्तों
के पीछे २ आने वाले ।

अवश्य में काफिरी के दिलों में भय डालूंगा ।
बस मारो ऊपर गर्दनो, के मारो उनमें से
प्रत्येक पोरी (संधि) पर ।

अल्लाह मुसलमानों के साथ है ।

ऐ लोगो जो ईमान लाये हो पुकारना स्वीकार
कर वास्ते अल्लाह के और वास्ते रसूल के ।

ऐ लोगो जो ईमान लाये हो मत चोरी करो
अल्लाह की रसूल की और मत चोरी करो अमा-
नत अपनी को ।

और मकर करता था अल्लाह और अल्लाह
भला मकर करने वालों का है ।

(७६) व कातिलूहुम् हत्ता लातकून फिलतुन्
व यकूनद्दीनु कुल्लुह् लिल्लाह

(सू० ८। आ० ३६)

व अलमू इन्नमा गनिम्तुम् मिन् शैइन् फ
अन्न लिल्लाहि खुमुसह् व लिरसल्लि

(सू० ८। आ० ४१)

(८०) वलौतरा इज् यतवफ्फुल्लजीन कफरु
ल्पलाइकतु यज़रिवून वुज़हहुम् व
अद्बारहुम्, वजूकू अज़ाबल्हरीक

फ अःलबनाहुम्, विज़ुनूबिहिम् व
अग्रकना आल फिअ्रान

व अइद्द लहुम् मस्तत्वअतुम् मिन्
कुव्वतिन् (सू० ८। आ० ५०। ५४। ६०)

(८१) या ऐ युहन्नवीयु हस्बुकल्लाहु व म
नित्तबअक मिनल् मोमिनीन्

(सू० ८। आ० ६४)

या ऐ युहन्नवीयु हरिंज़िवल् मोमिनीन्
अलल् किताल, ईयकुम् मिन्कुम् इश्रुन्
स्वाविरून यग़िलब् मिअ्रतैनि (आ० ६५)

फकुलू मिम्मा गनिम्तुम् हलालन् त्वैयि
वन् वत्तकुल्लाह, इन्नल्लाह गफ़ूरर्हीम्
(आ० ६६)

(८२) खालिदीन फीहा अबदा, इन्नल्लाह
इन्दह् अज़ुन् अज़ीम्

या ऐ युहल्लजीन आमनू ला तत्तखिज़्
आवाअकुम् व इल्वानकुम् औलियाअ
इनिस्तहब्बुल् कुफ़ अलल् ईमान्

सुम्म अंज़लल्लाहु सकीनतह् अला
रसल्लिही

और लड़ो उनसे यहां तक कि न रहे फितना
अर्थात् बल काफिरों का और होवे दीन तमाम
वास्ते अल्लाह के ।

और जानो तुम यह कि जो कुछ तुम लूटो
किसी वस्तु से निश्चय वास्ते अल्लाह के है पांचवां
हिस्सा उसका और वास्ते रसूल के ।

और कभी देखें नू जब काफिरों को फरिश्ते
कब्ज करते हैं मारते हैं मुख उनके और पीठें
उनकी और कहते चखो अजाब जलने का ।

हमने उनके पाप से उनको मारा और हमने
फिराअोन की कौम को डुबो दिया ।

और तैयारी करो वास्ते उनके जो कुछ तुम
कर सको ।

ऐ नबी कफ़ायत है तुम्ह को अल्लाह और
उनको जिन्होंने मुसलमानों से तेरा पक्ष किया ।

ऐ नबी रसाबत अर्थात् चाह चस्का दे मुसल-
मानों को ऊपर लड़ाई के जो हों तुम में से २०
आदमी सन्ताप करने वाले तो पराजय करें दो
सौ का ।

वस खाओ उस वस्तु से कि लूटा है तुमने
हलाल पवित्र और डरो अल्लाह से वह क्षमा करने
वाला दयालु है ।

सदा रहेंगे बीच उसके, अल्लाह समीप उस
के है, पुण्य बड़ा ।

ऐ लोगो जो ईमान लाये हो मत पकड़ो बापों
अपने को और भाइयों अपने को मित्र जो दोस्त
रखे कुफ़ को ऊपर ईमान के ।

फिर अल्लाह ने उतारी तसल्ली अपनी ऊपर
रसूल अपने के ।

व अलल् मोमिनीन व अजल जुनूदन
लम् तरौहा व अज्जबल्लजीन कफरू
व जालिक जजाउल् काफिरीन् ।

सुम्म यतूबुल्लाहु मिम् बअदि जालिक
अला में यशा ।

कातिलुल्लजीन लायोमिनून विल्लाह ।

(सू० ६ । आ० २२ । २३ । २६ । १७ । २६)

(८३) व नःनु नतरब्बस्वु चिकुम् एँ युस्वीब
कुमुल्लाहु विअजाबिम् मिन् इन्दर्हा
व विऐदीना । (सू० ६ । आ० ५२)

(८४) वअदल्लाहुल् मोमिनीन वल् मोमिनाति
जन्नातिन् तज्री मिन् तःतिहल् अन्हारू
खालिदीन फीहा व मसाकिन त्वैयिबतन्
फी जन्नाति अद्रिन्, व रिजवानुम् मिन्
ल्लाहि अक्बर, जालिक हुवल् फूजुल्
अजीम् । (सू० ६ । आ० ७२)

फ यस्वरून मिन्हुम्, सखिरल्लाहु
मिन्हुम् । (सू० ६ । आ० ७६)

(८५) लाकिर्निरसुल्ल वल्लजीन आमनू मअह
जाहदू वि अम्वाल्लिहिम् व अन्फुमिहिम्
व उलााइक लहुमुल् खैगान (आ० ८८)
व त्वबअल्लाहु अला कुलूबिहिम् फहुम
ला यअलमून । (सू० ६ । आ० ६३)

(८६) खुज् मिन् अम्वाल्लिहिम् स्वदकतन्
तुत्वः हिरुहुम् व तुजक्कीहिम् विहा ।
इन्नल्लाहशतरा मिनल् मोमिनीन अन्फु
सहुम् व अम्वाल्लिहिम् विअन्न लहुमुल्लजन्नत
युक्तातिलून फी सबीलिल्लाहि फ
यक्तूलून व युक्तूलून ।

(सू० ६ । आ० १०३, १११)

और ऊपर मुसलमानों के और उतारे लश्करों
नहीं देखा तुमने उनको और अजाब किया उन
लोगों को और यही सजा है काफिरों को ।

फिर फिर आवेगा अल्लाह पीछे उसके
ऊपर ।

और लड़ाई करो उन लोगों से जो ईमान
नहीं लाते ।

और हम बाट देवने वाले हैं वास्ते तुम्हारे
यह कि पहुंचावे तुम को अल्लाह अजाब अपने
पास से वा हमारे हाथों से ।

प्रतिज्ञा की है अल्लाह ने ईमान वालों से
और ईमान वालियों से बहिर्तों चलती हैं नीचे
उनके से नहीं सदेव रहने वाली बीच उसके
और घर पवित्र बीच बहिर्तों अंदर के
और प्रसन्नता अल्लाह की ओर बढ़ी है और
यह कि वह है मुराद पाना बड़ा ।

बस ठट्टा करते हैं उनसे, ठट्टा किया अल्लाह
ने उन से ।

परन्तु रसूल और जो लोग कि साथ उसके
ईमान लाये जिहाद किया उन्होंने साथ धर्म
अपने के तथा जान अपनी के और इन्हीं लोगों
के लिये भलाई है ।

और मोहर रक्खी अल्लाह ने ऊपर दिलों
उनके के, बस वे नहीं जानते ।

ले माल उनके से गैरात कि पवित्र करे तू
उनको अर्थान वाहरी और शुद्ध कर तू उनको
साथ उसके अर्थान गुप्त में ।

निश्चय अल्लाह ने मोल ली है मुसलमानों
से जानें उनकी और माल उनके बदले, कि वास्ते
उनके बहिर्त है लड़ेंगे बीच मार्ग अल्लाह के
बस मारेंगे और मर जावेंगे ।

(८७) या ऐ युहल्लजीन आमन् कातिलुल्ल
जीन यलूनकुम् मिनल् कुफ्फारि वल्
यजिद् फ्रीकुम् गिण्ज्वः ।

अवला यरौन अन्नहुम् युप्रतनून
फ्री कुल्लि आमिन् मर्रतन् औ
मर्रतैनि सुम्म ला यतूबून वलाहुम्
यज्जक्करून् । (स० ६ । आ० १२३, १२६)

(८८) इन्न रब्बकुमुल्लाहुल्लजी खलकस्समावाति
वल् अज्ज्व फ्री सिच्चति ऐयामिन् सुम्म
स्तवा अलल् अर्शा, युदब्बिरुल् अम्र ।
(स० १० । आ० ३)

(८९) हुदौ वरद्धतुल्लिल् मोमिनीन् ।
(स० ११ । आ० ५७)

(९०) लियब्लुवकुम् ऐयुकुम् अह्सनु अमला
वल इंकुन्त इन्नकुम् मव्जुसून मिम्
बअदिल् मौत । (स० ११ । आ० ७)

(९१) ब क्रील या अज्जुब्ब्लई मा अकि व या
समाउ अक्लिई व गैज्वल् माउ ।
व या कौमि हाजिही नाकतुल्लाहि
लकुम् आयतन् फज्जरूहा ताकुल् फ्री
अज्जिन्ल्लाहि । (स० ११ । आ० ४४ । ६४)

(९२) खालिदीन फ्रीहा मा दामतिस्समावातु
वल् अज्ज्व ।

ब अम्मल्लजीन सुहद् फफिल् जन्नति
खालिदीन फ्रीहा मादामतिस्समावातु
वल् अज्ज्व । (स० ११ । आ० १०७ । १०८)

ऐ लोगो जो ईमान लाये हो लड़ो उन लोगों
से कि पास तुम्हारे हैं काफिरों से, और चाहिये
कि पावें बीच तुम्हारे दड़ता ।

क्या नहीं देखते यह कि वे बलाओं में डाले
जाते हैं हर वर्ष के एक वा दो बार, फिर वे नहीं
तोबा करते और न वे शिक्ता पकड़ते हैं ।

निश्चय परवरदिगार तुम्हारा अल्लाह है
जिसने पैदा किया आसमानों और पृथिवी को
बीच छः दिन के फिर करार पकड़ा ऊपर अर्श के
तदवीर करता है काम फी ।

शिक्ता और दया वास्ते मुसलमानों के ।

परीक्षा लेवे तुम को, कौन तुम में से अच्छा
है कर्मों में; जो कहे तू, अवश्य उठाये जाओगे
तुम पीछे मृत्यु के ।

और कहा गया ऐ पृथिवी अपना पानी
निगल जा और ऐ आसमान बस कर और पानी
सूख गया ।

और ऐ कौम यह है निशानी ऊंटनी
अल्लाह की वास्ते तुम्हारे बस छोड़ दो उसको
बीच पृथिवी अल्लाह के खाती फिरे ।

और सदैव रहने वाले बीच उसके जब तक
कि रहें आसमान और पृथिवी ।

और जो लोग सुभागी हुए बस बहिश्त के
सदा रहने वाले हैं जब तक रहें आसमान और
पृथिवी ।

(६३) इज् काल यूसुफु लिअबैहि या अबति
इन्नी रऐतु (वगैरः) ।

(सू० १२ । आ० ४ से ५७ तक)

(६४) अब्लाहुल्लजी रफअस्समावाति बिगैरि
अमदिन् तरौनहा सुम्मस्तवा अलल्
अशि ।

व सरखरशमस वल् कपर ।

वहुवल्लजी मददल् अफ्रव ।

अन्जल मिनस्समाइ माअन् फसालत्
औ दियतुम् बिकद्रिहा ।

अल्लाहु यन्सुत्तुरिङ्क लिमैयशाउ व
यात्नदरु ।

(सू० १३ । आ० २ । ३ । १७ । २६)

(६५) कुलु इअल्लाह युज़िवल्लु मैं यशाउ
व यःदी इलैहि मन् अनाब् ।

(सू० १३ । आ० २७)

(६६) व क्जालिक अज्जल्लाहु हुक्मन् अर
बीयन् बलइनित्तवअत अःवाअहुम्
बअद मा जाअक मिनल् इल्म् ।

फ इकमा अलैकल् बलाग व अलैनल्
हिसाब । (सू० १३ । आ० ३७ । ४६)

(६७) व सरखर लकुमुशमस वल् कपर
दाइवीन् ।

इबल् ईसान लज़वलुमुन् कुफ्फार ।

(सू० १४ आ० ३३ । ३४)

(६८) फ इजा सर्वैतुहू व नफरत्तु फीहि
मिरूही फकऊलहू साजिदीन ।

।ल रब्बि विमा अइवैतनी लउजैयिनन्न
लहुम् फिल् अज़िब वल उम्वियन्नहुम्

(अज्मईन्) (सू० १५ । आ० २६ । ३६)

जब यूसुफ ने अपने बाप से कहा कि ऐ बाप
मेरे, मैंने एक स्वप्न में देखा (इत्यादि) ।

अल्लाह वह है कि जिसने खड़ा किया आस-
मानों को बिना खम्बे के देखते हो तुम उसको फिर
उहरा ऊपर अर्श के ।

आज्ञा वर्तने वाला किया सूरज और चाँद को ।

और वही है जिसने बिछाया पृथिवी को ।

उतारा आसमान से पानी बस बहे नाले
साथ अन्दाज़ अपने के ।

अल्लाह खोलता है भोजन को वास्ते जिसके
चाहे और तंग करता है ।

कह निश्चय अल्लाह गुमराह करता है जिस
को चाहता है और मार्ग दिखाता है तर्फ अपनी उस
मनुष्य को रुजू करता है ।

इसी प्रकार उतारा हमने इस कुरान को अर्बी
जो पक्त करेगा तू उनकी इच्छा का पीछे इसके
की आई तेरे पास विद्या से ।

बस सिवाय इसके नहीं कि ऊपर तेरे पैगाम
पहुंचाना है और ऊपर हमारे है हिसाब लेना ।

और किया सूर्य चन्द्र को सदैव फिरने
वाले ।

निश्चय आदमी अवश्य अन्याय और पाप
करने वाला है ।

बस ठीक करूं मैं उसको अर फूंक दूं बीच
उसके रूह अपनी से बस गिर पड़ो वास्ते उसके
मिजदा करते हुए ।

कहा ऐ रब मेरे इस कारण कि गुमराह किया
तू ने मुझ को अवश्य जीनत दूंगा मैं वास्ते उनके
बीच पृथिवी के और गुमराह करूँगा ।

(६६) वलकद् व अस्ना फी कुल्लि उम्पतिन्
रसूला ।

इजा अग्दनाहु अब्नकूल लहू कुन् फयकून् ।
(सू० १६ । आ० ३६ आ० ४०)

(१००) व यजअलून लिल्लाहिल् बनाति
सुब्दानहू वलहुम् मा यशतहून् ।
(आ० ५७)

तल्लाहि लकद् अर्मल्ला ।
(सू० १६ । आ० ६३)

(१०१) उलाइकल्लजीन तवअल्लाहु अला
कुलूचिहिम् व सम्इहिम् व अब्स्वारि
हिम्, व उलाइक हुमुल् गाफिलून् ।
वतुवफ्फा कुल्लु नफ्फिसिम् मा अमिलत्
बहुम् ला युज्वलमून् ।
(सू० १३ । १०८ । १११)

(१०२) वजअल्ला जहन्नम लिक्काफिगीन
हस्वीरा ।
व कुल्ल ईसानिन् अल्लज्जम्नाहु त्वाइ
रहू फी उन्किही, वनुखिजुलहू यौमल्
कियामति किताबै यल्काहु मंशूरा ।
वकम् अलबना मिनल् कुरूनि मिम्
वअदि नूहिन् ।
(सू० १७ । आ० ८ । १३ । १७)

(१०३) व आतैना समूदन्नाकत मुब्स्वरतन् ।
वस्तफ्फज्जि मनिस्तत्वअत ।
यौम नदूकु कुल्ल उनासिम् विइमामि
इम्, फमन् ऊतिव किताबहू वियमी
निही (सू० १७ । आ० ५६ । ६४ । ७१)

और निश्चय भेजे हमने बीच हर उम्मत के
पैगम्बर ।

जब चाहते हैं हम उसको, यह कहते हैं हम
उसको हो बस हो जाती है ।

और नियत करते हैं वास्ते अल्लाह के बेटियां
पवित्रता है उसको और वास्ते उनके है जो कुछ
चाहें ।

कसम अल्लाह की अवश्य भेजे हमने
पैगम्बर ।

ये लोग वे हैं कि मोहर रक्खी अल्लाह ने
ऊपर दिलों उनके और कानों उनके और आंखों
उनकी के और ये लोग वे हैं वे ग़बर ।

और पूरा दिया जावेगा हर जीव को जो कुछ
किया है और वे अन्याय न किये जायेंगे ।

और किया हमने दोज़ख को वास्ते काफ़िरों
के घेरने वाला स्थान ।

और हर आदमी को लगा दिया हमने उसको
अमलनामा उसका बीच गर्दन उसकी के, और
निकालेंगे हम वास्ते उसके दिन क़ियामत के एक
किताब कि देवेगा उसको खुला हुआ ।

और बहुत मारे हमने कुरनून से पीछे
नूह के ।

और दिया हमने समूद को ऊंटनी प्रमाणा ।

और बहका जिसको बहका सके ।

जिस दिन बुलावेंगे हम सब लोगों को साथ
पेशवाओं उनके के बस जो कोई दिया गया
अमलनामा उसका बीच दहिने हाथ उसके के ।

(१०४) उलाइक लहुम् जन्नातु अद्निन्
तञ्जी मिन् तःतिहिमुल् अन्हारु युह
ल्लौनफ्रीहा मिन् असाविर मिन् जहबिन्
व यल्बख्न सियाबन् खुज्वरम् मिन्
सुन्दुसिन् व इस्तब्राकिम् मुत्तकिईन
फ्रीहा अलल् अराइकि, निअमस्मवावु
वहसुनत् मुर्तफकन(स० १८। आ० ३५)

(१०५) व तिल्कल् कुरा अलबनाहुम् लम्मा
ज्वलमू, व जअल्ना लिमःलिकिहिम्
मौइदन् । (स० १८। आ० ५६)

(१०६) व अम्मल् गुलामु फकान अववाहु
मोमिर्नैनि फखशीना ऐयुहिक्हुमा
त्वुग्यानम् व कुफा ।

हत्ता इजा बलग मग्निबश्शम्सि बजदहा
तशुबु फ्री ऐनिन् हमिअतिन् ।

कालू या जलकर्नैनि इन्न याजूज व
माजूज मुफ्सिदन फिल् अर्ब ।

(स० १८। आ० ८०। ८६। ६४)

(१०७) बज्कुफिल् किताबि मर्यम, इजिन्त
बजत् मिन् अःलिहा मकानन् शर्की
यन्, फत्तखजत् मिन् दूनिहिम्
हिजाबन् फ असेल्ना इलैहा रूहना
फतमस्सल लहा बशम् सवीया ।

कालत् इन्नी अऊजु विर्रह्वानि मिन्क
इन् कुन्त तक्कीयन् ।

काल इन्मा अन रसलु रब्बिकि, लि
अहब लकि गुलामन् जक्कीयन् ।

ये लोग हैं वास्ते उनके हैं बाग हमेशा रहने
के, चलती हैं नीचे उनके से नहरें, गहिना पहि-
नाये जावेंगे बीच उसके कंगन सोने के से और
पोशाक पहिनेंगे वस्त्र हरित लाही की से और
ताफते की से, तकिये किये हुए बीच उसके ऊपर
तख्तों के, अच्छा है पुण्य और अच्छी है बहिरत
लाभ उठाने की ।

और यह बगियाँ हैं कि मारा हमने उनको
जब अन्याय किया उन्होंने, और हमने उनके
मारने की प्रतिज्ञा म्थापन की ।

और यह जो लड़का, बस थे मा बाप उसके
ईमान वाले, बस डरे हम यह कि पकड़े उनको
सरकशी में और कुफ में ।

यहां तक कि पहुंचा जगह डूबने सूर्य की,
पाया उसको डूबता था बीच चश्मे कीचड़ के ।

कहा उनने ऐजुलकरनैन निश्चय याजूज
माजूज फिसाद करने वाले हैं बीच पृथिवी के ।

और याद करो बीच किताब के मर्यम को
जब जा पड़ी लोगों अपने से मकान पूर्वी में ।
बस पड़ा उनसे इधर पर्दा बस भेजा हमने रूह
अपनी को अर्थात् फरिश्ता, बस सूत पकड़ी वास्ते
उसके आदमी पुष्ट की ।

कहने लगी निश्चय मैं शरण पकड़ती हूं
रहमान की तुझ से जो है तू परहेजगार ।

कहने लगा सिधाय इसके नहीं कि मैं भेजा
हुआ हूं मालिक तेरे के से तो कि दे जाऊं
मैं तुझको लड़का पवित्र ।

कालत् अन्ना यकूनु ली गुलामुन् व
लम् यम्सस्नी बशरुन् व लम्अकु
बशीया ।

फ हमलत्हु फन्तबजत् बिही मकानन्
कस्वीया ।

(सू० १६ । आ० १६ । १७ । १८ । १६ । २० । २२)

(१०८) अलम् तर अन्ना अर्सल्लनशयात्वीन
अलल् काफिरीन तउज़्जूहुम् अज़्जन् ।

(सू० १६ । आ० ८३)

(१०९) व इन्नी लगफ्फारुन् लिमन् ताब
व आमन व अमिल स्वालिहन् सुम्मः
तदा । (सू० २० । आ० ८२)

(११०) व जअल्ना फिल् अज़्ज़ि व रवासिय
अन् तमीद बिहिम् ।

(सू० २१ । आ० ३१)

(१११) वल्लती अःस्वनत् फर्जहा फ्नफ्फल्ना
फीहा मिरूहिना । (सू० २१ । आ० ६१)

(११२) अलम् तर अन्नल्लाह यस्जुदु लहू मन्
फिस्ममावाति व मन् फिल् अज़्ज़ि
वशम्सु वल्कमरू वन्नुज़्ज़ुम् वल्
जिबालु वशशजरु वद्दवाबु ।

युहल्लौन फीहा मिन् असात्रि मिन्
जहबिन् व लूलुअन्, वलिबासुहुम्
फीहा हरीरुन् ।

व त्वःहिर् बैतिय लिच्चाइफीन वल्
काइमीन ।

सुम्मल् यक्रुवू तफसहुम् वल् यूफू
नुज़्ज़ूर हुम् वल् यच्यौवफू विल्
बैतिल् अतीक ।

कहा कैसे होगा वास्ते मेरे लड़का, नहीं हाथ
लगाया मुझको आदमी ने, नहीं मैं बुरा काम
करने वाली ।

बस गर्भित हो गई साथ उसके और जा
पड़ी साथ उसके मकान दूर अर्थात् जंगल में ।

क्या नहीं देखा तूने यह कि भेजा हमने शय-
तानों को ऊपर काफिरों के बहकाते हैं उनको
बहकाने कर ।

और निश्चय क्षमा करने वाला हूँ वास्ते उस
मनुष्य के तोबाः की और ईमान लाया कर्म किये
अच्छे फिर मार्ग पाया ।

और किये हमने बीच पृथिवी के पहाड़ ऐसा
न हो कि हिल जावे ।

(और शिक्का दी हमने उस औरत को) और
रक्षा की उसने अपने गुह्य अङ्गों की बस फूंक
दिया हमने बीच उसके रूह अपनी को ।

क्या नहीं देखा तूने कि अत्लाह को सिजदा
करते हैं जो कोई बीच आसमानों और पृथिवी
के हैं सूर्य और चन्द्र तारे और पहाड़ वृक्ष और
जानवर ।

पहिनाये जावेंगे बीच उसके कंगन सोने से
और मोती और पहिनावा उनका बीच उसके
रेशमी है ।

और पवित्र रख घर मेरे को वास्ते गिर्द
फिरने वालों के और खड़े रहने वालों के ।

फिर चाहिये कि दूर करें मैल अपने और
पूरी करें भेंटें अपनी और चारों ओर फिरें घर
करीम के ।

लियजूकुरुस्मल्लाहि ।

(सू० २२ । आ० १८ । २३ । २६ । २६ । ३४)

(११३) सुम्म इन्नकुम् यौमल् क्रियामति तुब्
असून । (सू० २३ । आ० १६)

(११४) यौम तशहदु अल्लहिम् अल्सिनतुहुम्
व ऐदीहिम् व अर्जुलुहुम् बिमा कान्
यअमलून ।

अल्लाहु नूरुसमावाति वल् अर्ज़िन्,
मसलु नूरिही कमिशकातिन् फीहा
मिस्ववाहुन्, अल् मिस्ववाहु फी
जुजाजतिन्, अज्जुजाजतु कअबहा
कौकबुन् दुरीयुन् यूकदु मिन् शजरतिन्
मुबारकतिन् जैतूनतिन् ला शर्क़ीय
तिन् वला गर्बीयतिन् यकादु जैतुहा
युज़्जीउ वलौलम् तम्मसहु नारुन्
नूरुन् अलानूरिन्, यःदिल्लाहु
लिन्रिही में यशाउ ।

(सू० २४ । आ० २४ । ३५)

(११५) वल्लाहु खलक कुल्ल दाब्बतिन् मिम्मा
इन्, फ मिन्हुम् में यम्शी अला
बत्बनिही ।

व में युत्विइल्लाह वरसूलहू ।

कुल्ल अत्वीउल्लाह व अत्वीउर्सूल ।
व अत्वीउर्सूल लअल्लकुम् तुर्हमून् ।
(सू० ०४ । आ० ४५ । ५२ । ५४ । ५६)

(११६) व यौम तशक्कुकुस्समाउ विल्लामामि
व नुज़्जिल्लम्लाइकतु तंज़ीला ।

तो कि नाम अल्लाह का याद करें ।

फिर निश्चय तुम दिन क़ियामत के उठाये
जाओगे ।

उस दिन कि गवाही देवेंगे ऊपर उनके
जबानें उनकी और हाथ उनके और पांच उनके
साथ उस वस्तु के कि थे करते ।

अल्लाह नूर है आसमानों का और पृथिवी
का, नूर उसके कि मानिन्द ताक़ की है बीच उस
के दीप हो, और दीप बीच कंदील शीशों के है,
वह कंदील मानों कि तारा है चमकता, रोशन
किया जाता है दीपक वृत्त मुबारिक जैतून के से,
न पूर्व की ओर है न पश्चिम के समीप है, तेल
उसका रोशन हो जावे जो न लगे उसको आग,
रोशनी के ऊपर रोशनी, मार्ग दिखाता है
अल्लाह नूर अपने की जिसको चाहता है ।

और अल्लाह ने उत्पन्न किया हर जानघर
को पानी से बस कोई उनमें वह है कि जो चलता
है पेट अपने के ।

और जो कोई आज्ञा पालन करे अल्लाह की
रसूल उसके की ।

कह आज्ञा पालन करो खुदा की व रसूल उसके की ।

और आज्ञा पालन करो रसूल की ताकि दया
किये जाओ ।

और जिस दिन कि फट जावेगा आसमान
साथ बदली के, और उतारे जावेंगे फरिश्ते ।

फला तुविइल् काफिरीन व जाहिद्
हुम बिही जिहादन् कबीरा ।

फ्र उलाइक युबद्दिलुल्लाहु सैयिआति
हिम् हसनातिन् ।

व मन् ताव व अमिल स्वालिहन्
फइन्नहू यतूबु इल्ल्लाहि मतावा ।

(सू० ५ । आ० २५ । ५२ । ७० । ७१)

(११७) व औहैना इला मूसा अन् अस्सि
बिइवादी इन्नकुम् मुत्तबऊन्

फ अर्मल फिअौनु फिल् यदाइनि
हाशिरीन् ।

अल्लजी खलकनी फहुव यःदीनि ।

वल्लजी हुव युत्वइमुनी व यस्कीनि ।

वल्लजी अत्वमउ पैयिफरली खत्वी
अती यौमहीनि ।

(सू० २६ । आ० ५२ । ५३ । ७८ । ७६ । ८२)

(११८) मा अन्त इल्ला बशरुम् पिस्लुना,
फाति विआयतिन् इन् कुंत मिनस्वा
दिकीन् ।

काल हाजिही नाकतुन् लहाशिर्वुन् ।

(सू० २६ । आ० १४४ । १४५)

(११९) या मूसा इन्नहू अनल्लाहुल् अजीजुल्
हकीमु, व अल्कि अस्वाक, फलम्मा
रआहा तःतफ़ु कअन्नहा जानुन्,
या मूसाला तखफ़, इन्नी लायखाफ़
लदैयल्लुसलून् ।

अल्लाहु लाइलाह इल्ला हुव रबुवुल्
अर्शिल् अजीम् ।

बस मत कहा मान काफिरी का और भगड़ा
कर उनसे साथ भगड़ा बढ़ा ।

और बदल डालता है अल्लाह बुराइयों को
की को भलाईयों से ।

और जो कोई तोबाः करे और कर्म करे
अच्छे बस निश्चय आता है तरफ अल्लाह की ।

वही कि हमने तर्फ मूसा की यह कि ले चल
रात को बन्दों मेरे को, निश्चय तुम पीछा किये
जाओगे ।

बस भेजे लोग फिरोन ने बीच नगरों के जमा
करने वाले ।

और वह पुरुष कि जिसने पैदा किया मुझ
को बस वही मार्ग दिखलाता है ।

और वह जो ग्विलाता है मुझको पिलाता है मुझको
और वह पुरुष कि आशा रखता हूँ मैं यह
कि जमा करे वास्ते मेरे अपराध मेरा दिन
क्यामत के ।

नहीं तू आदमी (परन्तु) मानन्द हमारी
बस ले आ कुछ निशानी जो है तू सचचों से ।

कहा यह ऊंटनी है वास्ते उसके पानी पीना
है एक बार ।

ये मूसा बात यह है कि निश्चय मैं अल्लाह
हूँ गालिब । और डाल दे असा अपना बस जब
कि देखा उसको हिलता था मानो कि वह
सांप है ।

ये मूसा मत डर निश्चय नहीं डरते समीप
मेरे पैगम्बर ।

अल्लाह नहीं कोई मावूद परन्तु वह मालिके
अर्श बड़े का ।

अल्ला तअल्लू अलैय वातूनी
मुस्लिमीन् ।

(सू० २७ । आ० ६ । १० । २६ । ३१)

(१२०) वतरल् जिवाल तःसबुहा जामिदतन्
वहिय तमुरुं मर्रस्सहाबि, स्वुन्अल्ला
हिल्लजी अत्कन कुल्ल शैइन्, इन्नह
खवीरुम् बिमा तफ्अल्लून् ।

(सू० २७ । आ० ८८)

(१२१) फ वकजहू मूसा फ कज़ा अलैहि ।

(सू० २८ । आ० १५)

काल् रबि्व इन्नी ज़वलम्तु नफ्मी
फग़फ़िली फग़फ़रलह, इन्नह हुवल
गफ़ूरहीमु । (सू० २८ । आ० १६)

व रब्बुक यरल्लुकु मा यशाउ व यरल्लारु

(सू० २८ । आ० ६८)

(१२२) व वस्स्वैनल् इंसान बिवालिदैहि
हुस्नन्, व इन् जाहदाक लितुश्रिकवी
मा लैस लकबिही इल्मुन् फला तुत्वी
हुमा इलैय मजिउकुम् ।

(सू० २६ । आ० ८)

व लकद् अस्सैल्ला नूहन् इला कौमिही
फ लबिस फ़ीहिम् अल्फ सनतिन्
इल्ला खम्सीन आमन् ।

(सू० २६ । आ० १४)

(१२३) अल्लाहु यन्दउल्लखल्क सुम्म युईदुहू
सुम्म इलैहि तुर्जऊन् ।

व यौम तक्कूमस्साअत युब्लिसुल्
मुज्जिमून् ।

यह कि मत सरकशी करो ऊपर मेरे और
चले आओ मेरे पास मुमलमान होकर ।

और देखेगा तू पहाड़ों को, अनुमान करता
है तू उनको जमे हुए, और वे चले जाते हैं
मानिन्द चलने बादलों की, कारीगरी अल्लाह की
जिसने दृढ़ किया हर वस्तु को निश्चय खबरदार
है उस वस्तु से कि करते हो ।

बस मुष्ट मारा उसको मूसा ने बस पूरी की
आयु उसकी ।

कहा ऐ रब मेरे निश्चय मैंने अन्याय किया
जान अपनी को बस क्षमा कर मुझको बस क्षमा
कर दिया उसको निश्चय वह क्षमा करने वाला
दयालु है ।

और मलिक तेरा उत्पन्न करता है जो कुछ
चाहता है और पसन्द करता है ।

और आज्ञा दी हमने मनुष्य को साथ मा
बाप के भलाई करना और जो भगड़ा करें तुझसे
दोनों, यह कि शरीक लावे तू साथ मेरे उस वस्तु
को, कि नहीं वास्ते तेरे साथ उसके ज्ञान, बस मत
कहा मान उन दोनों का तर्फ मेरी है ।

और अवश्य भेजा हमने नूह को तफ कौम
उसके कि बस रहा बीच उनके हजार वर्ष परन्तु
पचास वर्ष कम ।

अल्लाह पहिली बार करता है उत्पत्ति, फिर
दूसरी बार करेगा उसको, फिर उसी की-ओर फेरे
जाओगे ।

और जिस दिन बर्पा अर्थात् खड़ी होगी
कयामत निराश होंगे पापी ।

फ्र अम्मल्लजीन आमन् व अपिलुस्स्वा
लिहाति फ्रहुम् फ्री रौज्वतिन् युःवरून्
वलइन् असन्ना रीहन् फ्रअौहु मुस्व
फ्ररन् (लज्वल्लू मिम्बअदिही यक्फु
रून्) ।

कजालिक यत्वबउल्लाहु अला कुलु
बिल्लजीन ला यअलमून् ।

(सू० ३० । आ० ११ । १२ । १५ । ५१ । ५६)

(१२४) तिल्क आयातुल्किताबिल् हकीम् ।
खलकसमावाति विगैरि अमदिन्
तरौनहा व अक्का फिल् अज्जिं व रवा
सिय अन्तपीद विकुम् ।

(सू० ३१ । आ० २ । १०)

अलम् तर अन्नल्लाह यूलिजुल्लैल
फिन्नहारि वयूलिजुअहार फिल्ललि ।

अलम् तर अन्नल् फुल्क तज्जी फिल्
वःरि विनिअतिल्लाहि लिपुरीकुम्
मिन् आयातिही ।

(सू० ३१ । आ० २६ । ३१)

(१२५) युदब्बिरुल् अम्र मिनस्समाइ इलल्
अज्जिं व सुम्म यअरुजु इल्लैहि फ्री
यौमिन् कान मिक्दारुह अल्फ सनतिम्
मिम्मा तउदून् ।

जालिक आलिमुल्लौवि वरशाहादतिल्
अज्जीजुरहीम् ।

सुम्म सव्वाहु वनफख फ्रीहि मिरूहिही

कुल् यतवफ्फाकुम् मलकुल् मौतिल्लज्जी
बुक्कल विकुम् ।

बस जो लोग कि ईमान लाये और काम
किये अच्छे बस वे बीच बाग के सिंगार किये
जावेंगे ।

और जो भेज दें हम एक बाव बस देखें उस
खेली को पीली हुई ।

इसी प्रकार मोहर रखता है अल्लाह ऊपर
दिलों उन लोगों के कि नहीं जानते ।

ये आयतें हैं किताब हिक्मत वाले की ।
उत्पन्न किया आसमानों को बिना सुतून अर्थात्
खम्भे के देखते हो तुम उसको और डाले
बीच पृथिवी के पहाड़ ऐसा न हो कि हिल जावे ।

क्या नहीं देखा तुने यह कि अल्लाह प्रवेश
कराता है रात को बीच दिन के और प्रवेश
कराता है दिन को बीच रात के ।

क्या नहीं देखा कि किशियाँ चलती हैं बीच
दर्या के साथ निआमतों अल्लाह के तो कि दिख-
लावें तुमको निशानियाँ अपनी ।

तदबीर करता है काम की आसमान से तर्फ
पृथिवी की फिर चढ़ जाता है तर्फ उसकी बीच
एक दिन के कि है अवधि उसकी सहस्र वर्ष उन
वर्षों से कि गिनते हो तुम ।

यह है जानने वाला शैब का और प्रत्यक्ष का
शालिब दयालु ।

फिर पुष्ट किया उसको और फूँका बीच उस
के रूह अपनी से ।

कह कब्ज करेगा तुमको फरिश्ता मौत का
वह जो नियत किया गया है साथ तुम्हारे ।

वलीशेना ल आतैना कुल्ल नफ्सिन्
हुदाहा वलाकिन् हक्ककल्लौलु मिन्नी
ल अम्लअन्न जहन्नम मिनल् जिन्नति
वन्नासि अज्मईन् ।

(सू० ३२ । आ० ४ । ५ । ६ । ११ । १३)

(१२६) कुल् लैयन्फअकुमुल् फिरारु इन्
फार्तुम् मिनल्मौति अविल् कर्त्तिल ।

या निसाअन्नवीयि मै याति मिन्कुन्न
बिफाहिशतिन् मुबैयिनतिन् युज्वा
अफ् लहल् अजाबु ज्वेअफ्नि, व
कान जालिक अलल्लाहि यसीरा ।

(सू० ३३ । आ० १६ । ३०)

(१२७) वकर्न फिचुयूतिकुन्न, व अत्वेअन्न
छाह व रसूलहू ।

फल्म्मा कज़्वा जेदुम्भिन्हा व त्वरन्
जव्वज् ना कहा लिक्कैला यकून
अलल्मोमिनीन हरजुन् फी अज़्वाजि
अदुइयाइहिम् इजा कज़्वायौ मिन्हुन्न व
त्वरन्, वकान अम्रुल्लाहि मफ्ऊलन् ।

माकान अलन्नवीयि मिन् हरजिन् फीमा
फरज़्वाहू लहू ।

माकान मुहम्मदुन् अब्बा अहदिम्
मिरिजालिकुम् ।

वअन्नतम् मोमिनतन् इव्वहबत् नफूसहा
लिन्नवीये ।

तुर्जी मन्तशाउ मिन्हुन्न व तोवी इलैक
मन् तशाउ, फला जुनाह अलैक ।

और जो चाहते हम अवश्य देते हम हर एक
जीव को शिक्ता उसकी परन्तु सिद्ध हुई बात मेरी
ओर से कि अवश्य भरूँगा मैं दोऊज को जिनों
से और आदमियों से इकट्ठे ।

कह कि कभी न लाभ देगा भागना तुमको
जो भागो तुम मृत्यु व क़तल से ।

ऐ बीबियों नबी की जो कोई आवे तुम में से
साथ निर्लज्जता प्रत्यक्ष के दुगना किया जावेगा
वास्ते उसके आज्ञाव और है यह ऊपर अल्लाह
के सहल ।

और अटकी रहो बीच घरों अपने के आज्ञा
पालन करो अल्लाह और रसूल की (सिवाय
इसके नहीं) ।

वस जब अदा कर ली ज़ैद ने हाजत उससे,
ब्याह दिया हमने तुफ से उसको ताकि न होवे
ऊपर ईमान वालों के तंगी बीच बीबियों ले
पालकों उनके के, जब अदा कर लें उनसे हाजत
और है आज्ञा खुदा की की गई ।

नहीं है ऊपर नबी के कुछ तंगी बीच उस वस्तु के ।

नहीं है मुहम्मद बाप किसी मर्दा का ।

और हलाल की स्त्री ईमान वाली जो देवे
बिना महर के जान अपनी वास्ते नबी के ।

ठील देवे तू जिसको चाहें उनमें से और
जगह देवे तर्फ अपनी जिसको चाहे, नहीं पाप
ऊपर तेरे ।

या ऐ युहल्लजीन आमनू लातदुखुलू
बुयूतन् नवीये ।

व माकान लकुम् अन्तोजू रसूलल्लाहि
वला अन् तन्किहू अज़्वाजहू मिम्बा
अदिही अबदन् ।

(सू० ३३ । आ० ३३ । ३७ । ३८ । ४० । ५० । ५१ । ५३)

(१२८) इन्नज़ालिकुम् कान इन्दल्लाहि अज़ीमा ।

इन्नल्लजीन योजूनल्लाह व रसूलहू
लअनहुल्लाहु ।

वल्लजी योजूनल् मोपिनीन वल् मोमि
नाति बिगैरि मक्तसबू फकदिःतमलू
बुःतानन् व इस्पम्मुवीना ।

मलूऊनीन, ऐनम सुक्किफू उखिजू व
कुत्तिलू तक्कीलन् ।

रब्बना आतिहिम् ज़वेअफ़ैनि मिनल्
अजाबि वल् अन्हुम् लअनन् कवीरा ।

(सू० ३३ । आ० ५३ । ५७ । ५८ । ६१ । ६८)

(१२९) वल्लाहुल्लजी अर्सलर्रियाह फ़तुसीरु

महाबन् फ़सुक्कनाहु इला बलदिम्
मैयितिन् फ़ अहयैना बिहिल् अज़्द
वअद् मौतिहा, कज़ालिकन्नुशूरु ।

अल्लजी अहल्लना दारल्लुक्कामति
मिन् फ़ज़वलिही, ला यमस्सुना फ़ीहा
नस्वबुन् वला यमस्सुना फ़ीहा लुगूबुन्

(सू० ३५ । आ० ६ । ३५)

(१३०) वल् कुअ्रीनिह्दीम, इन्नक लमिनल्
मुसलीन् ।

ऐ लोगों जों ईमान लाये हो मत प्रवेश करो
घरों में पैगम्बर के ।

नहीं योग्य वास्ते तुम्हारे यह कि दुःख दो
रसूल को, यह कि निकाह करो बीबियों उसकी
को पीछे उसके कभी ।

निश्चय यह है समीप अल्लाह के बड़ा पाप ।

निश्चय जो लोग कि दुःख देते हैं अल्लाह
को और रसूल उसके को, लानत की है उनको
अल्लाह ने ।

और वे लोग कि दुःख देते हैं मुसलमानों को
और मुसलमान औरतों को बिना इसके बुरा
किया है उन्होंने. बस निश्चय उठाया उन्होंने
बोहतान अर्थात् भूठ और प्रत्यक्ष पाप ।

लानत मारे, जहां पाये जायें पकड़े जावें
कतल किये जावें खूब मारा जाना ।

ऐ रब हमारे दे उनको द्विगुण अजाब से,
और लानत से बड़ी लानत कर ।

और अल्लाह वह पुरुष है कि भेजता है
हवाओं को बस उठाती हैं बादलों को बस हांक
लेते हैं तर्फ शहर मुर्दे की, बस जीवित किया
हमने साथ उसके पृथिवी को पीछे मृत्यु उसकी
के, इसी प्रकार कबरों में से निकलना है ।

जिसने उतारा बीच घर सदा रहने के दया
अपनी से, नहीं लगती हम को बीच उसके मह-
नत और नहीं लगती बीच उसके मांदगी ।

कसम है कुरान हद की निश्चय तू भेजे
हुओं से है ।

अला स्विरातिम्मुस्तकीम, तंजीलल्
अजीजिरहीम् ।

(सू० ३६ । आ० २ । ३ । ४ । ५)

(१३१) वनुफिख फिस्वूरि फइजाहुम् मिनल्
अज्दासि इला रब्विहिम् यन्सिलून ।

व तश्हदु अजुलुहुम् विमा कानू
यक्सिबून ।

इन्नमा अम्रुहू इजा अगद शैअन् ऐं
यकूल लहू कुन् फयकूनु ।

(सू० ३६ । आ० ५१ । ६५ । ८२)

(१३२) युत्वाफु अलैहिम् विकामिम् मिम्मइनिन्
बैज्वाअ लज्जतिल्लिशशारिबीन ।

(आ० ४५)

व इंदहुम् कास्विरातुच्चफि ईनुन् ।

क अन्न हुन्न बैज्जुम् मक्नूनुन् ।

(आ० ४८ । ४९)

अफमा नःनु धिर्मेयितीन ।

व इन्न लूत्वल् लामिनल् मुर्सलीन ।

इज् नज्जैनाहु व अःलहू अज्मईन ।

इल्ला अज्जान् फिल् गाबिरीन ।

सुम्म दम्पर्नल् आखिरीन ।

(सू० ३७ । आ० ४५ । ४८ । ४९ । ५८ । १३३ ।

१३४ । १३५ । १३६)

(१३३) जन्नाति अद्निम् मुफ्तहतन् लहुमुल्
अब्बाबु ।

मुत्किईन फीहा यदऊन फीहा बिफा-
किहतिन् कसीरतिन् व शराब ।

ऊपर मार्ग सीधे के उतारा है गालिब
दयावान ने ।

और फूँका जावेगा बीच सूर के बस नागहां
वह कबरों में से तर्फ मालिक अपने की दीड़ेंगे ।

और गवाही देंगे पांव उनके साथ उस वस्तु
के कि थे कमाते ।

सिवाय इसके नहीं कि आज्ञा उसकी
जब चाहे उत्पन्न करना किसी वस्तु का यह
कि कहता है वास्ते उसके कि हो जा बस हो
जाती है ।

फिराया जावेगा उसके ऊपर पियाला शराब
शुद्ध का ।

सपैद मजा देने वाली वास्ते पीने वालों के ।

ममीप उनके बैठी होंगी नीचे आंख रखने
वालियां सुन्दर आंख वालियां ।

मानो किये अण्डे हैं छिपाये हुए ।

क्या बस हम नहीं मरेंगे ।

और अवश्य लूत निश्चय पैगम्बरों से था ।

जब कि मुक्ति दी हमने उसको और लोगों
उसके को सब को ।

परन्तु एक बुढ़िया पीछे रहने वालों में है ।

फिर मारा हमने औरों को ।

बहिरते हैं सदा रहने की खुले हुए हैं दर उन
के वास्ते उनके ।

तकिये किये हुए बीच उनके मंगावेंगे बीच
इसके मेवे और पीने की वस्तु ।

व इन्दु हुम् कास्विरातुचक्रिं अत्राबुन् ।
फसजदल् मलाइकतु कुल्लुहुम्
अज्मऊन् ।

इल्ला इल्लीस, इस्तक्वर व कान
मिनल् काफिरीन ।

या इल्लीसु मा मनअक अन्
तस्जुद लिमा खलकतु वियदैय, अस्त
क्वर्त अम् कुन्त मिनल् आलीन ।

काल अन खैरुम्मिन्हु, खतक्कनी मिन्
नारिन् व खलक्कहू मिन त्वीन् ।

काल फख्रुज् मिन्हा फ इन्नक रजीम् ।

इन्न अलैक लअनती इला यौमिदीन् ।

काल रिब्ब फ अन्ज़िर्वनी इला यौमि
युब्असुन ।

काल फ इन्नक मिनल् मुन्ज़वरीन् ।

इला यौमिल् वक्त्रितल् माअलूम् ।

काल फविइज़्जतिक लउज़िवयन्नहुम्
अिज़्मइन् ।

(सू० । ३८ । आ० ५० । ५१ । ५२ । ७३ । ७४ ।

७५ । ७६ । ७७ । ७८ । ७९ । ८० । ८१ । ८२)

(१३४) इन्नल्लाह यरिफरुज़्जुनुव जमीआ,
इन्नहू हुवलू गफूररहीम् ।

वल् अज़्जु जमीअन् कब्ज़तुहू यौमल्
क्रियामति वस्समावातु मत्वीयातुन्
वियमीनिही ।

और समीप होंगी उनके नीचे रखने वालियाँ
दृष्टि. और दूसरों से समायु ।

बस सिजदा किया फरिश्तों ने सब ने ।

परन्तु शयतान ने न माना अभिमान किया
और था काफिरी से ।

ऐ शयतान किस वस्तु ने रोका तुम्ह को यह
कि सिजदा करे वास्ते उस वस्तु के कि बनाया मैंने
साथ दोनों हाथ अपने के, क्या अभिमान किया
तूने, वा था बड़े अधिकार वालों से ।

कहा कि मैं अच्छा हूँ उस वस्तु से, उत्पन्न
किया तूने मुझको आग से, उसको मिट्टी से ।

कहा बस निकल इन आसमानों में से बस
निश्चय तू चलाया गया है ।
निश्चय ऊपर तेरे लानत है मेरी दिन जज्जा तक ।

कहा ऐ मालिक मेरे ढील दे उस दिन तक
कि चठाये जावेंगे मुर्दे ।

कहा कि बस निश्चय तू ढील दिये गयों से है ।

उस दिन समय ज्ञात तक ।

कहा कि बस कसम है प्रतिष्ठा तेरी की, कि
अवश्य गुमराह करूँगा उनको मैं इकट्ठे ।

अल्लाह क्षमा करता है पाप सारे निश्चय
वह है क्षमा करने वाला दयालु ।

और पृथिवी सारी मूँठी में है उसकी दिन
क्यामत के, और आसमान लपेटे हुए हैं बीच
दाहने हाथ उसके ।

व अश्रकतिल् अर्जुर्वि विनूरि रन्विहा
व युज्जिवअन्कितावु वजिआइअ
विन्नवीयीन वरशुहदाए वकुज्जिवय
(दैनहुम् विन्हन्कि)

(सू० ३६ । आ० ५३ । ६७ । ६६)

(१३५) तंजीलुन्कितावि मिनल्लाहिल् अजी
जिल् अलीम् ।

शाकिरिज्जम्बि व काबिलचौवि ।

(सू० ४० । आ० २ । ३)

(१३६) फ कज्जाहुन्न सव्अ समावातिन् फी
यौमैनि व औहा फी कुल्लि समाइन्
अम्रहा ।

हत्ता इजा मा जाऊहा शहिद अलहिम्
सम्उहुम् व अस्वारुहुम् व जुलूदुहुम्
विमा कानू यअमलून् ।

व कालू लिजुलूदिहिम् लिम शहिदुत्तुम्
अलैना कालू अन्त्वकनन्लाहुल्लजी
अन्त्वक कुप्प शैअन् ।

(इन्नल्लजी अह्याहा) लमुयिल्मौता ।

(सू० ४१ । आ० १२ । २० । २१ । ३६)

(१३७) मकालीदुस्समावाति वल् अर्जिव,
यन्मुत्तुरिज्जि लिमै यशाउ व
यन्निदरु ।

यल्लुकु मा यशाउ, यहबु लिमैय-
शाउ इनासम् व यहबु लिमै यशा
उज्जुकूर ।

औ युजौविजुहुम् जुक्रानन् व इनासन्
व यज्जलु मैयशाउ अक्कीमा ।

और चमक जावेगी पृथिवी साथ प्रकाश
मालिक अपने के, और रखे जावेंगे कर्मपत्र
और लाया जावेगा पैगम्बरों को और गधाहों को
और फौसला किया जावेगा ।

उतारना किताब का अल्लाह गालिब जानने
वाले की ओर से है ।

क्षमा करने वाला पापों का और स्वीकार
करने वाला तोबा: का ।

बस नियत किया उसको सात आसमान बीच
दो दिन के और डाल दिया हमने बीच उसके
काम उसका ।

यहाँ तक कि जब जावेंगे उसके पास साक्षी
देंगे ऊपर उनके कान उनके और आंगवें उनकी
और चमड़े उनके, उनके कर्म से ।

और कहेंगे वास्ते चमड़े अपने के क्यों साक्षी
दी तू ने ऊपर हमारे, कहेंगे कि बुलाया है हमको
अल्लाह ने जिसने बुलाया हर वस्तु को ।

अवश्य जिलाने वाला है मुर्दों को ।

वास्ते इसके कूजियां हैं आसमानों की और
पृथिवी की खोलता है भोजन जिसके वास्ते
चाहता है और तंग करता है ।

उत्पन्न करता है जो कुछ चाहता है और
देता है जिसको चाहे बेटियां और देता है जिस
को चाहे बेटे ।

वा मिला देता है उनको बेटे और बेटियां
और कर देता है जिसको चाहे बाँक ।

वमा कान लिबशरिन् ऐयुकल्लिम
हुल्लाहु इल्ला वद्यन् औ मिन्वराइ
हजाबिन् औ युसिल्ल रसल्लन् ।

(सू० ४१ । आ० १२ । ४६ । ५० । ५१)

(१३८) वलम्मा जाअ ईसा विल्बैयिनाति ।

(सू० ४३ । आ० ६३)

(१३९) खुज्जुहु फअतिलूहु इलासवाइल् जहीम् ।

कजालिक, वजव्वज्जाहुम् बिहूरिन्
ईन् । (सू० ४४ । आ० ४७ । ५४)

(१४०) फ इजा लकीतुमुल्लजीन कपरू फ
ज्वर्बर्कावि, हत्ता इजा अस्खन्तुमूहुम्
फशुहु वल्वसाक् ।

वक ऐयिम्बिन् कर्यतिन् हिय अशद् कु-
व्वतन् मिन् कर्यतिकल्लती अस्वरज्जक
अःलवनाहुम् फला नास्विरलहुम् ।

मसलुल् जन्नतिल्लती वुइदल्मुत्तकून्,
फीहा अन्हारुम्बिम्माइन् गौरि आसिन्
व अन्हारुम्बिल्लबनिल् लम् यतगैयर्
त्वाअमुद्द, व अन्हारुम्बिन् खपरिल्लज्ज-
तिल् लिशशारिबीन, व अन्हारुम्बिन्
असलिम् मुसफ्फा, व लहुम् फीहा
मिन् कुल्लिस्सपराति व मरिफरतुम् मिर्-
रन्बिहिम् ।

(१४१) इजा रुज्जतिल् अज्जु रज्जन् ।

व वुस्सतिल्लिज्जबालु वस्सन् ।

फकानत् हवाअन् मुम्बस्सन् ।

फ अस्हावुल् मैमनति, मा अस्हावुल्
मैमनति ।

और नहीं है शक्ति किसी आदमी को कि
बात करे उससे अल्लाह परन्तु जी में डालने कर
वा पीछे पर्द के से, वा भेजे फरिश्ता पैगाम लाने
वाला ।

और जब आया ईसा साथ प्रमाण प्रत्यक्ष के ।

पकड़ो उसको बस घसीटो उसको बीचों बीच
दोज़ख के ।

इसी प्रकार रहेंगे और ब्याह देंगे उनको
साथ गोरियों अच्छी आंख वालियों के ।

बस जब तुम मिलो उन लोगों से कि
काफिर हुए बस मारो गर्दन उनकी यहाँ तक कि
जब चूर कर दो उनको बस दृढ़ करो कैद
करना ।

और बहुत बस्तियां हैं कि वे बहुत कठिन
थीं शक्ति में बस्ती तेरी स, जिससे निकाल दिया
तुम्हको मारा हमने उसको बस न हुआ कोई
सहाय देने वाला उनका ।

तारीफ उस बहिश्त की कि प्रतिज्ञा किये गये
हैं परहेजगार, बीच उसके नहरे हैं बिन बिगड़े
पानी की, और नहरें हैं दूध की, कि नहीं बदला
मज्जा उनका, और नहरें हैं शराब की मज्जा
देने वाली वास्ते पीने वालों के, और नहरें
शहद साफ किये गये की, और वास्ते उनके बीच
उसके मंवे हैं, प्रत्येक प्रकार से दान मालिक
उनके से ।

जब कि हिलाई जावेगी पृथिवी हिलाये जाने कर ।
और उड़ाए जावेंगे पहाड़ उड़ाने जाने कर ।

बस हो जावेंगे भुतुंगे टुकड़े टुकड़े ।

बस साहब दाहिनी ओर वाले क्या हैं साहब
दाहिनी ओर के ।

व अश्हाबुल् मशअमति, मा अश्हाबुल्
मशअमति ।

अला सुरुरिम् मौज़्वनतिन् ।

मुत्किईन अलैहा मुत्क़ाबिलीन ।

यत्वूफ़ अलैहिम् विल्दानुम् मुखल्लदून ।

विअक्वाचिन् व अचारिक ।

व कासिम् मिम् मईनिन् ।

ला युस्वद्दऊन अन्हा वला युंजिफ़ून ।

व फ़ाकिहतिम् मिम्मा यतखैयरून ।

व लःमि त्वैरिम् मिम्मा यशतहून ।

व हूरुन् ईनुन्, कअम्मालिल् लूलु
इल् मक्नून् ।

व फ़रुशिम्मफ़अतिन् ।

इन्ना अन्शानाहुन्न इंशाअन् ।

फ़जअल्ना हुन्न अब्कारन् ।

उरुबन् अत्राबा ।

फ़मालिऊन मिन्हल् वुत्वून ।

फ़ला उक्त्रिममु विमवाकिइब्जूम ।

(सू० ५६ । आ० ४ । ५ । ६ । ८ । ९ । १५ से २३ ।
३४ से ३७ । ५३ । ७५)

(१४२) इब्ल्लाह युहिबुल्लज़ीन युक्तातिलून
फ़ी मबीलिही । (सू० ६१ । आ० ४)

(१४३) या ऐ युहन्नबीयु क़िम तुहरिम् मा
अहल्लल्लाहु लक, तब्तगी मज़्वात
अज़्वाजिक, वल्लाहु ग़फ़ूरर्हीम् ।

असा रब्बुह इन् त्वल्लक़ुन्न ऐं युब्दिलहू
अज़्वाजन् खैरम् मिन्कुन्न मुस्लि-
मातिन् मोमिनातिन् क़ानितातिन् ताइ
बातिन् आबिदातिन् साइहातिन् सैयि-
बातिन् व अब्कारन् । (सू० ६६ । आ० १५)

और बाईं ओर वाले क्या हैं बाईं ओर के ।

ऊपर पलंग सोने के तारों से बुने हुए हैं ।

तकिये किये हुए हैं ऊपर उनके आमने सामने ।

और फिरंगे ऊपर उनके लड़के सदा रहने वाले ।

साथ आबख़ोरों के और आफ़ताबों के ।

और प्यालों के शराब साफ़ से ।

नहीं माथा दुखाये जावेंगे उससे और न विरुद्ध
बोलेंगे ।

और मेवे उस किसम से कि पसन्द करें ।

और गोशत जानवर पक्षियों के उस किसम
से कि पसन्द करें ।

और वास्ते उनके औरतें हैं अच्छी आंखों
वाली । मानन्द मोतियों छिपाये हुअों की ।

और बिछोने बड़े ।

निश्चय हमने उत्पन्न किया है औरतों को
एक प्रकार का उत्पन्न करना ।

बस किया है हमने उनको कुमारी ।

सुहाग वालियां बराबर अवस्था वालियां ।

बस भरने वाले हो उससे पेटों को ।

बस कसम खाता हूं मैं साथ गिरने तारों के ।

निश्चय अल्लाह मित्र रखता है उन लोगों
को कि लड़ते हैं बीच मार्ग उसके ।

ऐ नबी क्यों हराम करता है उस वस्तु को कि
हलाल किया है खुद! ने तेरे लिये, चाहता है तू
प्रसन्नता वीबियों अपनी की और अल्लाह क्षमा
करने वाला दयालु है ।

जल्दी है मालिक उसका जो वह तुमको छोड़ दे
तो, यह कि उसको तुम से अच्छी मुसलमान और
ईमान वालियाँ वीबियाँ बदल दे सेवा करने वालियाँ
तोबा करने वालियां भक्ति करने वालियाँ रोजा
रखने वालियां पुरुष देखी हुई और बिन देखी हुई ।

(१४४) या ऐ युहन्नबीयु जाहिदिल्कुफ्फार
बल् मुनाफिकीन बलुज् अलैहिम् ।

(सू० ६६ । आ० ६)

(१४५) वन्शक्रकतिसमाउ फहिय यौमइजिन्
वाहियतुन् ।

बल् मलकु अला अजाइहा, व यःमिलु
अर्श रब्बिक फौकहुम् यौमइजिन्
समानियतुन् ।

यौम इजिन् तोअरइवून ला तरफ्फा
मिन्कुम् खाफियतुन् ।

फ अम्मा मन् ऊतिय किताबहू बिय-
मीनिही फ यकूलु हाउमुकऊ
किताबियः ।

व अम्मा मन् ऊतिय किताबहू बिशि-
मालिही फयकूलु यालैतनी लम् ऊत
किताबियः ।

(सू० ६९ । आ० १६ । १७ । १८ । १९ । २५)

(१४६) तअरजुल् पलाइकतु वरूहु इलैहि
फी यौमिन् कान मिन्नदारुहू खम्सीन
अल्फ सनतिन् ।

यौम यखुजून मिनल् अज्दासि सिरा-
अन् कअन्नहुम् इला नुस्वुबिन्
युफिइवून । (सू० ७० । आ० ४ । ४३)

(१४७) कद् खलकहुम् अत्वारन् ।

अलम् तरौ कैफ खलकल्लाहु सब्अ
समावातिन् त्विवाकन् ।

व जअलल् क्रमर फीहिन्न नूरन्
व जअलशशम्स सिराजा ।

(सू० ७१ । आ० १४ । १५ । १६)

ऐ नबी भगड़ा कर काफिरों और गुप्त
शत्रुओं से और सख्ती कर ऊपर उनके ।

फट जावेगा आसमान बस वह उस दिन
सुस्त होगा ।

और फरिश्ते होंगे ऊपर किनारों उसके के
और उठावेंगे तख्त मालिक तेरे का ऊपर अपने,
उस दिन आठ जन ।

उस दिन सामने लाये जाओगे तुम न छिपी
रहेगी कोई बात छिपी हुई ।

बस जो कोई दिया गया कर्म पत्र अपना
बीच दाहिने हाथ अपने के बस कहेगा लो पदो
कर्म पत्र मेरा ।

और जो कोई दिया गया कर्मपत्र बीच बायें
हाथ अपने के बस कहेगा हाथ न दिया गया होता
मैं कर्मपत्र अपना ।

चढ़ते हैं फरिश्ते और रूह तर्फ उसकी वह
अजाब होगा बीच उस दिन के कि है परिमाण
उसका पचास हजार वर्ष ।

जब कि निकलेंगे कबरों में से दौड़ते हुए
मानो कि वह बुतों के स्थानों की ओर दौड़ते हैं ।

निश्चय उत्पन्न किया तुमको कई प्रकार से ।

क्या नहीं देखा तुमने कैसे उत्पन्न किया
अल्लाह ने सात आसमानों को ऊपर तले ।

और किया चाँद को बीच उसके प्रकाशक
और किया सूर्य को दीपक ।

(१४८) अन्नल् मसाजिद लिब्लाहि फला
तवूऊ मअल्लाहि अःदा ।

(सू० ७२ । आ० १८)

(१४९) व जुमिअशशम्सु वल् क्रमरु ।

(सू० ७५ । आ० ९)

(१५०) व यत्वूफु अलैहिम् विल्दानुम्मुखल्ल
दून, इजा रपेतहुम् हसिब्तहुम् लूलु
अम्मंसूरा ।

व हुल्लू असाविर मिन् फिउज़वः, वसका
हुम् रबुहुम् शराबन् त्वहूरा ।

(सू० ७६ । आ० १६ । २१)

(१५१) जजाअन् विफाकन् ।

व कासन् दिहाका ।

यौम यकूमूर्हु वल् मलाइकतु
सफ्रकन् ।

(सू० ७८ । आ० २६ । ३४ । ३८)

(१५२) इजशशम्सु कूविरत् ।

व इजन्नूजूमुन् कदरत् ।

व इजल्लिज्जवालु सुइयिरत् ।

व इजस्समाउ कुशित्वत् ।

(सू० ८१ । आ० १ । २ । ३ । ११)

(१५३) इजस्समाउन् फत्वरत् ।

व इजल्कवाकिबुन्तसरत् ।

व इजल्लिहारु फुज्जिरत् ।

व इजल्कुबूरु बुअसिरत् ।

(सू० ८२ । आ० १ । २ । ३ । ४)

(१५४) वस्समाइ जातिबुलूजि ।

बल् हुव कुअनुम्मजीदुन् फ्री लौहिम्

मःफ्रजिन् । (सू० ८५ । आ० १ । २१)

यह भी मसजिदें वास्ते अल्लाह के हैं बस
मत पुकारो साथ अल्लाह के किसी को ।

इकट्ठा किया जावेगा सूर्य और चांद ।

और फिरेंगे ऊपर उनके लड़के सदा रहने
वाले जब देखेगा तू उनको, अनुमान करेगा तू
उनको मोती बिखरे हुए ।

और पहनाये जावेंगे कंगन चाँदी के और
पिलावेगा उनको रब उनका शराब पवित्र ।

बदला दिये जावेंगे कर्मनुसार ।

और प्याले हैं भरे हुए ।

जिस दिन खड़े होंगे रूह और फरिश्ते सफ
बांध कर ।

जब कि सूर्य लपेटा जावे ।

और जब कि तारे गदले हो जावें ।

और जब कि पहाड़ चलाये जावें ।

और जब आसमान की खाल उतारी जावे ।

और जब कि आसमान फट जावे ।

और जब तारे भड़ जावें ।

और अब दर्या चीरे जावें ।

और जब कबरें जिला कर उठाई जावें ।

कसम है आसमान बुर्जों वाले की ।

किन्तु वह कुरान है बड़ा बीच लौह महफूज
(सुरक्षित तख्ती) के ।

(१५५) इन्नहुम् यकीदून कीदन् ।

व अकीदु कीदन् ।

(सू० ८६ । आ० १५ । १६)

निश्चय वे मकर करते हैं एक मकर ।

और मैं भी मकर करता हूँ एक मकर ।

(१५६) व जाअ रब्बुक वल् मलकु स्वफ्फन्
स्वफ्फन् ।

व जाइय यौमहज़िम् विजहन्नम् ।

(सू० ८६ । आ० २२ । २३)

और जब आवेगा मालिक तेरा और फरिश्ते
पंक्ति बाँध के ।

और लाया जावेगा उस दिन दोजख को ।

(१५७) फकाल लहुम् रसूलुब्बाहि नाकत-
ब्बाहि व सुक्याहा ।

फ कज़बुहु फअक्रूहा, फ दम्दम्
अलैहिम् रब्बुहुम् ।

(सू० ६१ । आ० १३ । १४)

बस कहा था वास्ते उनके पैगम्बर खुदा के
ने, रक्षा करो ऊँटनी खुदा की को, और पानी
पिलाना उसको ।

बस भुठलाया उसको बस पाँव काटे उसके
बस भरी ढाली ऊपर उनके रब उनके ने ।

(१५८) कब्बा लइल्लम् यन्तहि, लनस्फअम्
बिन्नास्वियति ।

नास्वियतिन् काजिबतिन् खात्वि
अतिन् ।

सनदुउज़्जभानियत ।

(सू० ६६ । आ० १५ । १६ । १८)

यों जो न रुकेगा अवश्य घसीटेंगे उसको हम
साथ बालों माथे के ।

वह माथा कि भूँठा है और अपराधी ।

हम बुलावेंगे फरिश्ते दोजख के को ।

(१५९) इन्ना अंजल्लाहु फीलैलितिल् कद्रि ।
वमा अद्राक मा लैलतुल्कद्रि ।

तन्ज़लुल्मलाइकतु वरूहु फीहा
विहज़िन रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन् ।

(सू० ६७ । आ० १ । २ । ४)

निश्चय उतारा हमने कुरान को बीच रात क़दर के
और क्या जाने तू क्या है रात क़दर की ।

उतरते हैं फरिश्ते और पवित्रात्मा बीच उसके,
साथ आज्ञा मालिक अपने की, वास्ते हर काम के ।

